बीओआई
वार्ता
बैंक ऑफ़ इंडिया की तिमाही हिंदी गृहपत्रिका
मार्च, 2023

अंतरराष्ट्रीय महिला दिवस

विशेषांक

बैंक ऑफ़ इंडिया
रिश्तों की जमापूँजी

अंतरराष्ट्रीय महिला दिवस का आयोजन

8 मार्च 2023 को अंतरराष्ट्रीय महिला दिवस के अवसर पर चर्चा सत्र का आयोजन किया गया जिसमें डॉ. रैना खत्री टंडन, सीईओ, राइट टु राइज़ प्राइवेट लिमिटेड, मुख्य अतिथि के रूप में उपस्थित थी। इस दौरान बैंक के कार्यपालक निदेशकगण श्री पी.आर. राजगोपाल, श्री स्वरूप दासगुप्ता, श्री एम. कार्तिकेयन और श्री सुब्रत कुमार उपस्थित रहे।

अंतरराष्ट्रीय महिला दिवस के उपलक्ष्य में दिनांक 08.03.2023 को प्रधान कार्यालय में कार्यरत महिलाओं द्वारा कार्यपालक निदेशकगण की उपस्थिति में गुब्बारे छोड़े गए। इस दौरान लिया गया एक समूह चित्र।

संरक्षक

श्री सुब्रत कुमार

कार्यपालक निदेशक

प्रधान संपादक

श्री प्रमोद कुमार द्विवेदी

महाप्रबंधक

उप प्रधान संपादक

सुश्री मऊ मैत्रा

सहायक महाप्रबंधक (राजभाषा)

संपादक मंडल

श्री एस चंद्रशेखर, मुख्य प्रबंधक

श्री पुनीत सिन्हा, मुख्य प्रबंधक

डॉ. पीयूष राज, मुख्य प्रबंधक

श्री निरंजन कुमार सामरिया, वरिष्ठ प्रबंधक

यह आवश्यक नहीं कि पत्रिका में
छपे लेखों में व्यक्त विचार बैंक के हों।

प्रधान संपादक,
बैंक ऑफ़ इंडिया, प्रधान कार्यालय,
राजभाषा विभाग, स्टार हाउस, जी-5, जी ब्लॉक,
बांद्रा-कुर्ला कॉम्प्लेक्स, बांद्रा (पूर्व)
मुंबई - 400 051

विषय-सूची

कहानी अजरख की.. — 06

भारत की वीरांगनाएँ - अंतरराष्ट्रीय महिला दिवस के उपलक्ष्य में — 09

जी-20 सम्मेलन 2023 के मंत्र “वसुधैव कुटुम्बकम्” की अवधारणा में डिजिटलीकरण और तकनीक की भूमिका — 13

साहित्य सृजन की धरती कानपुर — 16

पढ़ने की कला — 19

डिजिटल बैंकिंग और भाषा — 21

नारी सामर्थ्य — 23

केरल की सशक्त महिलाएं - एक परिचय — 26

फिनेकल की आत्मव्यथा — 29

भारत में महिला सुरक्षा — 31

कृष्ण - एक खोज स्वयं की — 32

आज के परिवेश में स्वास्थ्य का महत्व — 34

कार्यपालक निदेशक का संदेश

प्रिय साथियो,

बीओआई वार्ता के इस अंक के माध्यम से आपसे संवाद करते हुए मुझे अत्यन्त प्रसन्नता हो रही है। इस तिमाही के दौरान बैंक में उत्साहपूर्वक विश्व हिन्दी दिवस तथा अंतरराष्ट्रीय महिला दिवस मनाया गया। बैंक के सभी अंचलों में इस उपलक्ष्य में विभिन्न कार्यक्रम आयोजित किए गए जिनकी झलकियों का समावेश इस अंक में किया गया है। मुझे खुशी है कि इस अंक में हमारी महिला स्टाफ सदस्यों द्वारा लिखे गए आलेख/कविताएं शामिल करके इसे अंतरराष्ट्रीय महिला दिवस विशेषांक के रूप में मुद्रित किया जा रहा है। यह समय पूरे भारतवर्ष में विभिन्न त्यौहारों का समय होता है। इस समय नई फसल से जुड़े त्यौहार भी आते हैं जो हमें हमारी जड़ों से जोड़ते हैं।

चालू वित्त वर्ष की पिछली तिमाहियों में हमारे बैंक का वित्तीय प्रदर्शन अच्छा रहा है। कई मानदण्डों पर हमने सकारात्मक प्रगति दर्ज़ की है। इसी के मद्देनजर हमने मीयादी जमाराशियों के संग्रहण हेतु "शुभारंभ जमाराशि" नाम से एक अभियान आरंभ किया है जो वित्त वर्ष 2023-24 के पहले दिन से ही प्रभावी हो गया है। इस योजना में मीयादी जमा दरों में वृद्धि की गई है और हमें इस बढ़त का भरपूर फायदा उठाते हुए इस क्षेत्र में उल्लेखनीय योगदान देना चाहिए।

किसी भी वित्तीय संस्थान की सफलता का पहला राज यह है कि हम अपनी योजनाओं और उत्पादों को आमजन तक कितना पहुंचा पाएँ हैं। इसी से पता चलता है कि आमजन तक हमारी पैठ कितनी है। इस पैठ का एकमात्र आधार होता है कि हम अपनी योजनाओं, सेवाओं और उत्पादों की जानकारी हमारे ग्राहक और आम जनता को किस भाषा में प्रदान कर रहे हैं। इसमें कोई संदेह नहीं हो सकता कि हमें अपना ग्राहक आधार बढ़ाने के लिए हिन्दी और अन्य क्षेत्रीय भाषाओं का उपयोग अनिवार्य रूप से करना होगा। हमें हिन्दी तथा क्षेत्रीय भाषाओं के प्रयोग का एक माहौल बनाना होगा। विभिन्न क्षेत्रीय भाषाओं में कई संदर्भ साहित्य का निर्माण किया गया है जो स्टार डेस्क पर उपलब्ध है। मैं आशा करूँगा कि आप सभी इन संदर्भ साहित्यों का लाभ उठाएँ।

नए वित्तीय वर्ष हेतु आप सभी को शुभकामनाएँ

भवदीय,

सुब्रत कुमार

(सुब्रत कुमार)

प्रधान संपादक की कलम से

प्रिय साथियो,

बीओआई वार्ता के इस विशेषांक को प्रस्तुत करते हुए मुझे अत्यधिक प्रसन्नता हो रही है। यह अंक किसी एक निश्चित विषय-क्षेत्र या स्थिति पर केन्द्रित नहीं है जैसाकि 'विशेषांक' शब्द से भाषित होता है। यह इस अर्थ में विशेषांक है कि इस अंक में हमारे संस्थान के देश भर में फैले कार्यालयों की केवल महिला स्टाफ सदस्यों की रचनाओं, उनके विचारों को स्थान दिया गया है। इस अंक में विषय की विविधता है। इस अंक में आधुनिक युग की वीरांगनाओं से परिचय करवाया गया है। आशा है कि यह अंक आप सभी को पसंद आएगा।

हमने 8 मार्च को अंतरराष्ट्रीय महिला दिवस के आयोजन के साथ-साथ 10 जनवरी को अपने कार्यालयों में विश्व हिन्दी दिवस का आयोजन भी किया है। आप जानते ही हैं कि हिन्दी को वैश्विक पहचान और मान्यता दिलवाने के लिए भारत सरकार निरंतर प्रयासरत है। इसी के आलोक में फ़िजी के नांदी शहर में दिनांक 15 फरवरी से 17 फरवरी तक 12वाँ विश्व हिन्दी सम्मेलन आयोजित किया गया है।

संविधान के अनुच्छेद 343 और 351 के प्रावधानों के अंतर्गत हिन्दी के अधिक प्रसार और विकास हेतु भारत सरकार ने कुछ नवीन प्रयोग किए हैं। भारत सरकार, गृह मंत्रालय, राजभाषा विभाग ने एक तरफ "हिन्दी शब्द सिंधु" नाम से हिन्दी की समृद्धि हेतु एक विशाल शब्दकोश तैयार किया है और इसकी समृद्धि का कार्य अभी भी जारी है, तो दूसरी तरफ "कंठस्थ 2" भी प्रस्तुत किया है जो कंठस्थ का अधिक उन्नत रूप है। भारत सरकार के कार्यालयों में राजभाषा कार्यान्वयन की नोडल एजेंसी ने अपने वार्षिक कार्यक्रम 2023-24 में बताया है कि यह एक "अनुवाद सारथी" के रूप में कार्य करेगा। यह टूल न केवल अपने डाटा बेस से अंग्रेजी वाक्यों का प्रशासनिक अनुवाद उपलब्ध करवाता है, बल्कि डाटा बेस से इतर स्वयं भी अपने स्तर पर हिन्दी में अनुवाद का आउटपुट प्रदान करता है।

अतः आप सभी से अनुरोध है कि अपने दैनिक बैंकिंग कामकाज में इन टूल्स का अधिकाधिक उपयोग करते हुए राजभाषा हिन्दी को बुलंदियों पर लेकर जाएँ। सभी स्टाफ सदस्यों से मेरा आग्रह है कि भारत सरकार की राजभाषा नीति की अपेक्षाओं के अनुरूप अपने-अपने डेस्क का कार्य हिन्दी में करने का पूरा प्रयास करें।

हार्दिक शुभकामनाओं के साथ,

आपका,

(प्रमोद कुमार द्विवेदी)

कहानी अजरख की..

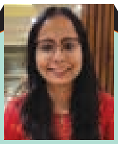

रूमी देसवाल
राजभाषा अधिकारी
गांधीनगर अंचल

काम के सिलसिले में पिताजी के लगातार स्थानांतरण होने के कारण मुझे बचपन से ही भारत के अलग-अलग राज्यों में रहने का मौका मिला है। घूमना इतना पसंद है कि दो दिन की छुट्टियाँ घर में बिताना बिल्कुल गवारा नहीं होता। गुजरात में 2 साल से ज्यादा हो गये थे लेकिन अभी तक कच्छ का रण नहीं देख पाई थी। अत: इस बार नए साल की पहली सुबह कच्छ में मनाने के लिए सब को राजी कर ही लिया। नए साल की शुरुआत दुनिया के सबसे बड़े साल्ट डेज़र्ट में करने की उत्सुकता के साथ-साथ वहां की प्रसिद्ध चीजें खरीदने की लालसा भी थी। मेरा मानना है कि किसी जगह को अच्छी तरह से जानने के लिए हमें वहाँ के ऐतिहासिक स्मारकों, खान-पान और परम्पराओं के जरिए उसकी विरासत और संस्कृति को समझना जरूरी है।

इसी के चलते हम कच्छ के एक दूरस्थ गाँव में पहुंचे जो आज भी वहां की वस्त्र परम्परा को जीवित रखे हुए है- गाँव है अजरखपुर। अजरखपुर वह जगह है जहां ब्लॉक-प्रिंटिंग करने वाले कच्छी कारीगर और शिल्पकार रहते और काम करते हैं। कला को अजरख कहा जाता है और उसी से गांव का नाम पड़ा है। अजरख नामक ब्लॉक-प्रिंटिंग शैली सिंधु घाटी सभ्यता की विरासत है। अजरख वस्त्रों पर एक प्राचीन ब्लॉक-प्रिंटिंग पद्धति का नाम है जो पाकिस्तान के सिंध, गुजरात के कच्छ और राजस्थान के बाड़मेर में उत्पन्न हुई थी। 'अजरख' शब्द अपने आप में कई अलग-अलग अवधारणाओं को दर्शाता है। कुछ के अनुसार, यह अरबी शब्द 'अजरख' से आया है, जिसका अर्थ है नीला, जो अजरख छपाई में प्रमुख रंगों में से एक है। अन्य इतिहासकारों का कहना है कि यह शब्द हिंदी के दो शब्दों- 'आज' और 'रख' से बना है।

गांव में रहने वाले खत्री परिवार मूल रूप से आधुनिक पाकिस्तान के सिंध प्रांत से आते हैं। ब्लॉक-प्रिंटर्स के समुदाय के रूप में, वे अजरख की 3000 साल पुरानी कला को जीवित रखे हुए हैं। विभाजन से पहले ही, सिंध में पानी की कमी के कारण ये परिवार कच्छ चले आये थे। अजरख प्रिंट में पाए जाने वाले रंग पारंपरिक तौर पर गहरे होते हैं, जो प्रकृति के प्रतीक हैं। गहरा लाल पृथ्वी का प्रतीक है तो इंडिगो ब्लू गोधूलि का प्रतीक है। काले और सफेद का उपयोग रूपांकनों की रूपरेखा और सममित डिजाइनों को परिभाषित करने के लिए किया जाता है। अजरख प्रिंट में मुख्य रूप से नील, मेहंदी, हल्दी, अनार, गुड़, लोहा और मिट्टी जैसे प्रकृति से प्राप्त रंगों का प्रयोग होता है। शिल्प जटिल है जिसमें समय लेने वाले चरण शामिल हैं। अलग-अलग शेड्स और कलरफास्ट डिजाइन बनाने के लिए ऊंट के मल, सोडा ऐश, अरंडी का तेल, हरड़, मजीठ, सप्पन की लकड़ी, रूबर्ब की जड़ और लाख के मिश्रण का भी उपयोग किया जाता है। इन्हें ठीक करने के लिए फिटकरी का इस्तेमाल किया जाता है। सामग्री के अभिनव मिश्रण से विभिन्न रंगों को प्राप्त किया जाता है। उदाहरण के लिए, अनार के छिलके और हल्दी के मिश्रण से पीला रंग निकलता है। अजरख प्रिंट में पारंपरिक विस्तृत डिजाइन का उपयोग अभी भी प्रचलित है, जो पिछली पीढ़ियों की विरासत अर्थात फूलों, पत्तियों और सितारों जैसे प्राकृतिक तत्वों के प्रतीक हैं। अजरख डिजाइन मुख्यत: दो प्रकार के हैं- एकपुरी अजरख जो एक तरफ छपा होता है और बिपुरी अजरख जो दोनों ओर मुद्रित होता है।

भारत के अन्य भागों के ब्लॉक-प्रिंटिंग से भिन्न, अजरख डिजाइन में इंडिगो रंग का बोलबाला है। गहरा नीला और गहरा लाल रंग अलग दिखता है। एक तरह से रंग, मरुस्थल की नीरसता को निर्धारित करने लगते हैं। डिजाइन भी अधिक धर्मनिरपेक्ष हो रहे हैं।

अजरख छपाई एक लंबी और कठिन प्रक्रिया है जिसमें छपाई

के कई चरणों की आवश्यकता होती है और कपड़े को बार-बार अलग-अलग प्राकृतिक रंगों और रंजकों से धोना पड़ता है। रेज़िस्ट प्रिंटिंग की तकनीक का उपयोग किया जाता है जिससे आवश्यक जगहों पर डाई सोखने में मदद मिलती है और उन जगहों पर डाई सोखने से रोका जाता है जहाँ रंग नही चढ़ाना होता है।

छपाई से पहले कपड़े को अच्छी तरह से धोया जाता है। रंगों के स्थिर होने के लिए स्टार्च को तब तक हटाया जाता है जब तक कि स्पर्श करने पर नरम ना हो जाए। डाई और प्रिंट के लगभग पंद्रह चरण होते हैं जिनमें आमतौर पर तीन सप्ताह लगते हैं जो और बढ़ भी सकते हैं। छपाई के प्रत्येक चरण के बाद धुलाई की जाती है, कभी-कभी कई बार। फिर कपड़े को अगले प्रिंट से पहले सुखाया जाता है। गहरे नीले और लाल रंग की शेड्स में अंतिम डिजाइन प्राप्त करने के उद्देश्य से विभिन्न प्रकार के रंगों के साथ इस प्रक्रिया को कई बार दोहराया जाता है। अगले चरण को शुरू करने में जितना अधिक समय लगता है, अंतिम प्रिंट उतना ही समृद्ध और जीवंत हो जाता है। परिणामस्वरूप अजरख के अति सुंदर और मनोरम डिजाइनों का निर्माण होता है।

अजरख छपाई में पानी महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। पानी रंगों की शेड्स और छटा से लेकर पूरी प्रक्रिया की सफलता या असफलता तक हर चीज को प्रभावित करता है। पानी में लौह तत्व निर्णायक कारक है जो अंतिम उत्पाद की गुणवत्ता निर्धारित करता है। कच्छ के धमाड़का गाँव में पानी के अनुकूल स्रोत होने के कारण काफी समय तक अजरख छपाई का वह प्रमुख स्थान था। लेकिन 2001 के भूकंप के बाद पानी में लोहे की मात्रा बहुत बढ़ गई और पानी अनुपयोगी हो गया। इस प्रकार धमाड़का गाँव के कारीगरों को एक नए गाँव में स्थानांतरित किया गया जिसका नाम अजरखपुर रखा गया।

सिंध, कच्छ और बाड़मेर अजरख छपाई, उत्पादन तकनीक, रूपांकनों और रंगों के उपयोग के संदर्भ में लगभग समान हैं। इसका कारण यह है कि इन क्षेत्रों में शिल्पकार, खत्री समुदाय के उन्हीं जाति-परिवारों से आते हैं जो 16वीं शताब्दी में सिंध से कच्छ और बाड़मेर आ गए थे, और जो सिंधु घाटी सभ्यता के वंशज हैं। वर्तमान में खत्री परिवार अजरख छपाई की पारंपरिक तकनीक को आगे बढ़ाने के लिए मशहूर हैं।

अजरख शिल्पकार आज सिंथेटिक रंगों और परिष्कृत मशीनरी के उपयोग, सरकारी ऋण प्राप्ति में परेशानी, ब्लॉकों की उच्च लागत, जल संसाधनों के संकट, नए शिल्पकारों की कमी जैसी कई समस्याओं का सामना कर रहे हैं, जो उनके काम में बाधक बनती हैं।

परंपरागत रूप से, सब्जी के रंगों का उपयोग किया जाता था, परन्तु कीमत ज्यादा होने के कारण नैफ्थोल रंगों और सिंथेटिक रंगों का उपयोग करना शुरू किया गया। लेकिन एक बार फिर शिल्प के पुनरुद्धार के साथ, अजरख प्रिंटर प्राकृतिक रंगों के उपयोग पर लौट आए हैं। डिजाइन लाइब्रेरी में दिन-ब-दिन नए-नए मोटिफ जोड़े जा रहे हैं। पहले पूरा डिजाइन और बॉर्डर एक ही हुआ करते थे, लेकिन अब कॉम्प्लिमेंट्री बॉर्डर का चलन है। बदलते समय ने उपयोगिता और डिजाइन दोनों के संदर्भ में महत्वपूर्ण परिवर्तनों की मांग की है। लेकिन पारंपरिक कला की सुंदरता समय की कसौटी पर खरी उतरी है। आज पूरे

भारत के साथ-साथ पाकिस्तान में भी अजरख छपाई के कई केंद्र हैं और इसने यह साबित कर दिया है कि यह कला सर्वोच्च है और राष्ट्रीय सीमाओं में बंधी हुई नहीं है।

वर्तमान में अनेक गैर-सरकारी संगठन शिल्पकारों को नए इनपुट प्रदान करके इस शिल्प के उत्थान में लगे हुए हैं। एनजीओ उन्हें बाजार में अपने उत्पाद बेचने और उचित मुनाफा कमाने में भी मदद करते हैं।

पर्यावरणीय आपदाओं, औद्योगीकरण और बदलते राजनीतिक शासनों के बावजूद, अजरख का पारंपरिक शिल्प जीवित रहा है। हाथ से बने, इको-फ्रेंडली और प्राकृतिक रंगों को नॉन इको-फ्रेंडली मशीन से बने और सिंथेटिक डाई और रंगों के बदले ज्यादा पसंद किया जाता है। शिल्पकार पश्चिमी बाजारों के लिए प्राकृतिक रंगों के सदियों पुराने उपयोग को फिर से जीवंत कर रहे हैं।

ब्लॉक प्रिंट्स मुझे सदा ही लुभाते आए हैं और अब अजरख कला की कहानी उन्हीं कलाकारों की जुबानी सुन और महसूस कर मैंने जी भर कर खरीददारी की। अब क्योंकि ऑनलाइन शॉपिंग का चलन है तो घर बैठे भी ब्लॉक प्रिंट वाले कपड़े बढ़-चढ़ कर खरीद पाती हूँ।

विश्व कला समुदाय में हमें भारत के शिल्प को बढ़ावा देने और विरासत को आगे बढ़ाने वाले कारीगरों को प्रोत्साहित करने के लिए प्रतिबद्ध रहना चाहिए। मेरा मानना है कि अजरख केवल आर्थिक मूल्य का शिल्प नहीं है। यह एक एकीकृत कारक के रूप में कार्य करता है जो विभिन्न वर्गों और धार्मिक पृष्ठभूमि के परिवारों को एक साथ लाता है। यह भारत की सांस्कृतिक अर्थव्यवस्था का एक प्रतीकात्मक मूल्य रखता है और देश के अद्वितीय रचनात्मक कला परिदृश्य, संस्कृति और पारंपरिक विरासत को दर्शाता है।

महिला सशक्तिकरण

सशक्तिकरण एक विकासात्मक प्रक्रिया है जिसके माध्यम से जागरूकता, कार्यशीलता, नियंत्रण के लिए व्यक्ति अपने विषय में निर्णय लेने में समर्थ एवं स्वतंत्र होता है। एक सशक्त व्यक्ति अपने जीवन से संबंधित निर्णय लेने के लिए पूर्ण रूप से स्वतंत्र होता है। महिला सशक्तिकरण से तात्पर्य महिलाओं को आत्मनिर्भर बनाना, समाज में समानता, निर्णय लेने की क्षमता से है। इस प्रकार महिला सशक्तिकरण एक सर्वांगीण एवं बहुआयामी नजरिया है। एक राष्ट्र का सर्वांगीण विकास तभी संभव है जब महिलाओं को समाज में उनका यथोचित स्थान एवं पद प्रदान किया जाए।

आज नारी प्रत्येक क्षेत्र में विकास की ओर बढ़ रही है। पुरुषों के साथ कंधे से कंधा मिलकर काम कर रही है। किसी भी समाज का पूर्ण विकास तभी संभव है, जब पुरुष एवं नारी का समान विकास हो। सशक्तिकरण प्रक्रिया की शुरुआत परिवार से होती है, यदि परिवार में स्त्रियों के साथ समानता का व्यवहार हो तो वे सामाजिक रूप से भी सामने आएँगी। इसमें परिवार में पुत्र एवं पुत्री में भेदभाव न रखना, पत्नी को सहयोगिनी रूप में स्वीकार करना, उनके प्रति अपशब्दों का प्रयोग न करना आदि शामिल हैं। इसके लिए बड़ों का पूर्ण सहयोग आवश्यक है तो पुत्रों को अपनी बहन, माँ एवं अन्य लड़कियों के साथ शालीन व्यवहार करना सिखाना भी शामिल है क्योंकि व्यक्ति बचपन में अपने परिवार में जो देखता, सुनता एवं समझता है, वही युवावस्था में अपने जीवन में उतारता है।

सशक्तिकरण प्रक्रिया का आरंभ व्यक्ति से होता है एवं विलय समाज की विचारधारा के साथ होता है। वही विचारधारा इसे आगे विकसित एवं पोषित करती है। भारतीय संविधान में मौलिक अधिकारों में स्त्री एवं पुरुष को समान माना गया है। हमारा संविधान दोनों को बराबरी का दर्जा देता है। आधुनिक युग में ऐसा कोई क्षेत्र नहीं, जहां महिलाओं ने अपने परिश्रम व योग्यता से अपनी विशिष्ट पहचान न बनाई हो।

ज्योत्स्नारानी नंदी
वरिष्ठ प्रबंधक
एसएमईसीसी सिलीगुड़ी

भारत की वीरांगनाएँ - अंतरराष्ट्रीय महिला दिवस के उपलक्ष्य में

आरती साहा (महिला तैराक)

आरती साहा का नाम भारत की उन महिलाओं में गिना जाता है जिन्होंने हमारे देश का नाम दुनिया भर में रोशन किया है। दिनांक 24 सितंबर 1940 को कोलकाता में जन्मी आरती साहा

इंग्लिश चैनल पार करने वाली भारत व एशिया की पहली महिला तैराक थीं। आरती साहा ने अपने बचपन से ही तैरना शुरू कर दिया था। भारतीय पुरुष तैराक मिहिर सेन से प्रेरित होकर उन्होंने इंग्लिश चैनल पार करने की कोशिश की और 29 सितम्बर 1959 को महज 19 वर्ष की आयु में एशिया से ऐसा करने वाली प्रथम महिला तैराक बन गईं। इंग्लिश चैनल को पार करना आसान नहीं था। आरती साहा अपने पहले प्रयास में इस चैनल को पार करने में नाकाम रही थी। जिस समय इन्होंने पहली बार ये चैनल पार करने की कोशिश की थी, उस समय इनकी आयु मात्र 18 वर्ष थी। आरती से पहले न भारत और न ही एशिया की कोई महिला तैराक इंग्लिश चैनल को पार कर सकी थी। इन्होंने कई तैराकी प्रतियोगिताओं में भाग लिया था और साल 1945 से लेकर 1951 तक इन्होंने 22 इनाम अपने नाम किए थे। आरती साहा को इस उपलब्धि हेतु 1960 में भारत सरकार द्वारा पद्मश्री पुरस्कार से सम्मानित किया गया था। भारतीय डाक विभाग द्वारा 1998 में इनके नाम पर एक डाक टिकट भी जारी किया गया था। इन्होंने 23 अगस्त 1994 को जीवन की अंतिम सांस ली।

अवनि चतुर्वेदी (लड़ाकू पायलट)

अवनि चतुर्वेदी भारत की पहली महिला लड़ाकू पायलटों में से एक है। इनका जन्म 27 अक्तूबर 1993 को मध्य प्रदेश के रीवा जिले में हुआ था। अपने दो साथियों- मोहन सिंह और भावना कंठ - के साथ जून 2016 में भारतीय वायु सेना के लड़ाकू स्क्वाड्रन में शामिल करते हुए इन्हें पहली बार लड़ाकू पायलट घोषित किया

गया था। अवनि चतुर्वेदी ने अपना पूरा प्रशिक्षण हैदराबाद की वायु सेना अकादमी से लिया। इन्होंने अपनी स्कूली शिक्षा देवलोंद से की जो मध्य प्रदेश के शहडोल जिले में स्थित एक छोटा सा शहर है। इन्होंने 2014 में अपनी स्नातक की शिक्षा प्रौद्योगिकी विषय के साथ वनस्थली विद्यापीठ, राजस्थान से पूर्ण की। तत्पश्चात उन्होंने भारतीय वायु सेना की परीक्षा को उत्तीर्ण किया। उन्हें अपनी विद्यापीठ के फ्लाइंग क्लब से कुछ घंटे की उड़ान का अवसर प्राप्त हुआ जिसने उन्हें भारतीय वायुसेना में शामिल होने के लिए प्रेरित किया। 2018 में, अवनि चतुर्वेदी मिग -21 में एकल उड़ान भरने वाली पहली भारतीय महिला पायलट बनीं। 2018 में अवनी को फ्लाइट लेफ्टिनेंट के रूप में पदोन्नत किया गया। वर्ष 2023 में, वह जापान में एक हवाई युद्धाभ्यास में भाग लेने वाली भारतीय वायु सेना की पहली महिला लड़ाकू पायलट बनीं। अवनि चतुर्वेदी राजस्थान के सूरतगढ़ में भारतीय वायु सेना संख्या 23 स्क्वाड्रन पैंथर्स में तैनात है।

मीरा साहिब फ़ातिमा बीबी (न्यायाधीश - सर्वोच्च न्यायालय)

मीरा साहिब फ़ातिमा बीबी का जन्म 30 अप्रैल 1927 को केरल के पथानामथिट्टा में हुआ था। फ़ातिमा के पिता का नाम मीर साहिब और माँ का नाम ख़दीजा बीबी था। इन्होंने अपनी शुरुआती पढ़ाई अपने पैतृक नगर से की और बाद में त्रिवेंद्रम से बी.एस.सी. की पढ़ाई की। तिरुअनंतपुरम से फ़ातिमा ने बी.एल. की डिग्री प्राप्त की। 14 नवम्बर 1950 को

फातिमा बीवी अधिवक्ता के रूप में पंजीकृत हुईं। मई, 1958 में केरल अधीनस्थ न्यायिक सेवा में मुंसिफ़ के रूप में नियुक्त हुईं। 1968 में वे अधीनस्थ न्यायाधीश के रूप में पदोन्नत हुईं। 1972 में मुख्य न्यायिक मजिस्ट्रेट, 1974 में ज़िला एवं सत्र न्यायाधीश, 1980 में आयकर अपीलीय ट्रिब्यूनल की न्यायिक सदस्य और 8 अप्रैल 1983 को उन्हें उच्च न्यायालय में एक न्यायाधीश के रूप में नियुक्त किया गया। 6 अक्टूबर 1989 को वे सर्वोच्च न्यायालय की न्यायाधीश नियुक्त हुईं। ये पहला मौक़ा था जब किसी महिला को हिन्दुस्तान में जज बनाया गया हो। यहां से 24 अप्रैल 1992 को वे सेवा निवृत हुईं। उन्हें 3 अक्टूबर 1993 को राष्ट्रीय मानवाधिकार आयोग (भारत) का सदस्य बनाया गया।

अरुणिमा सिन्हा (पर्वतारोही)

अरुणिमा सिन्हा का जन्म 1988 में अम्बेडकर नगर, उत्तर प्रदेश में हुआ। अरुणिमा की रुचि शुरूआत से ही खेल कूद में थी। वह एक राष्ट्रीय स्तर की वॉलीबॉल खिलाड़ी भी रही हैं। अरुणिमा सिन्हा एवरेस्ट शिखर फतह करने वाली पहली भारतीय दिव्यांग है। अरुणिमा के जीवन में वर्ष 2011 की एक घटना ने सब कुछ बदल दिया। दिल्ली के लिए ट्रेन की यात्रा के दौरान कुछ बदमाशों द्वारा अरूणिमा को अकेला देखकर उन्हें लूटने का प्रयास किया गया। विरोध करने पर बदमाशों द्वारा उन्हें ट्रेन से बाहर फेंक दिया गया, जिससे दूसरी पटरी पर आने वाली ट्रेन से उनका पैर कट गया और वह दिव्यांग हो गई। इस घटना ने उनसे वॉलीबॉल खेलने का अवसर छीन लिया और उनके सारे सपने जैसे टूट से गए। परंतु अरुणिमा हार मानने वालों में से नहीं थी। अपने कृत्रिम पैर के सहारे उन्होंने पर्वतारोहण हेतु तैयारी की एवं सन् 2013 में दुनिया की सबसे ऊंची चोटी माउंट एवरेस्ट (29028 फुट) को फतह कर नया इतिहास रचा। वर्ष 2015 में उन्हें पद्मश्री पुरस्कार से नवाजा गया। अरुणिमा की जीवनी "बॉर्न अगेन इन द माउंटेन" का लोकार्पण प्रधानमंत्री मोदी जी द्वारा किया गया।

शीला डावरे (ऑटोरिक्शा चालक)

शीला डावरे महाराष्ट्र की पहली महिला ऑटोरिक्शा चालक हैं। उन्होंने 12 वीं तक पढ़ाई की और पुणे शहर में ऑटोरिक्शा चलाना शुरू किया। लगभग 13 वर्षों तक ऑटोरिक्शा चलाने के बाद महिला ऑटोरिक्शा चालकों के लिए एक अकादमी शुरू की। शुरुआत में उन्होंने ऑटोरिक्शा किराए पर लेकर चलाना शुरू किया। इसमें उन्हें कई बाधाओं का सामना करना पड़ा। महिला होने की वजह से लोग उन्हें ऑटोरिक्शा किराए पर नहीं देते थे। उन्होंने पैसे बचाए और अपना ऑटोरिक्शा खरीदा। उन्हें भारत की प्रथम महिला ऑटोरिक्शा चालक का पुरस्कार मिला है। उन्होंने 1988 में रिक्शा चलाना शुरू किया, तब स्थिति बहुत अलग थी। पुरुष एकाधिकार, सामाजिक रूढ़ियों के कारण महिला रिक्शा चालकों को हर स्तर पर संघर्ष करना पड़ा। उचित प्रशिक्षण, कड़ी मेहनत और आत्मविश्वास के बल पर उन्होंने यह उपलब्धि हासिल की। उनकी यह उपलब्धि 'लिम्का बुक ऑफ रिकार्ड्स' में भी दर्ज हुई है।

रोशनी शर्मा (बाइक राइडर)

रोशनी शर्मा एक भारतीय बाइक राइडर है। इनका जन्म उत्तर प्रदेश के नरोरा जिले में हुआ था। यहीं से इन्होंने अपनी शुरुआती शिक्षा-दीक्षा ली थी। रोशनी शर्मा ने भारत में पहली बार महिला राइडर्स के साथ कन्याकुमारी से वरमीर तक सोलो बाइक राइड किया। बेंगलुरु की इस छब्बीस वर्षीया सॉफ्टवेयर इंजीनियर ने वर्ष 2014 में यह नया और अनूठा रिकार्ड बनाया और देश के दक्षिणी सिरे से उत्तरी छोर तक सवारी करने वाली पहली भारतीय महिला बनी। उनकी यात्रा 11 भारतीय राज्यों से होते हुए लेह में समाप्त हुई। इस साहसिक यात्रा से पहले इन्होंने बाइक पर अब तक की सबसे अधिक 850 किमी की यात्रा की थी। रोशनी शर्मा ने कन्याकुमारी से कश्मीर तक की अपनी यात्रा 12 दिन में पूरा करने की योजना बनाई। इस यात्रा की कुल लागत लगभग रु.1 लाख रही। उन्होंने अपनी इस यात्रा के लिए स्पांसर ढूँढने का प्रयास किया जो कि असफल रहा। क्योंकि उन्हें अपनी इस यात्रा को रद्द नहीं करना था, इसलिए इस यात्रा का पूरा खर्चा उन्होंने खुद ही वहन किया। रोशनी शर्मा ने अकेले यह यात्रा पूर्ण करके एक साहसिक कार्य किया है।

झूलन गोस्वामी (महिला क्रिकेटर)

झूलन गोस्वामी (जन्म:- 25 नवम्बर 1982, नादिया, पश्चिम बंगाल, भारत) भारतीय महिला क्रिकेट खिलाड़ी है जो क्रिकेट के सभी प्रारूपों - टेस्ट, एक दिवसीय अंतरराष्ट्रीय और ट्वन्टी-ट्वन्टी में खेलती हैं। मई 2017 में गोस्वामी एक दिवसीय अंतरराष्ट्रीय क्रिकेट में दक्षिण अफ्रीका के खिलाफ अपना 181वां विकेट लेकर सर्वाधिक विकेट चटकाने वाली अग्रणी महिला क्रिकेटर बन गई। उन्होंने वर्ष 2007 में आईसीसी पुरस्कार एवं एम ए चिदम्बरम ट्रॉफी के लिए सर्वश्रेष्ठ महिला क्रिकेट खिलाड़ी का भी खिताब जीता। झूलन भारतीय महिला क्रिकेट टीम की कप्तान भी रह चुकी है। झूलन गोस्वामी के जीवन पर एक बायोपिक बन रही है जिसका वर्किंग टाइटल चाकदह एक्सप्रेस है। सितंबर 2018 में

श्रीलंका के खिलाफ उन्होंने अंतरराष्ट्रीय क्रिकेट में अपना 300 वाँ विकेट लिया। नवंबर 2020 में गोस्वामी को आईसीसी महिला ओडीआई क्रिकेटर ऑफ़ द डिकेड अवार्ड के लिए नामांकित किया गया था। गोस्वामी ने सितंबर 2022 में अंतरराष्ट्रीय क्रिकेट से संन्यास ले लिया है!

साइना नेहवाल (महिला बैडमिंटन खिलाड़ी)

साइना का जन्म 17 मार्च 1990 को हिसार, हरियाणा के एक जाट परिवार में हुआ था। इनके पिता का नाम डॉ. हरवीर सिंह नेहवाल और माता का नाम उषा नेहवाल है। सायना ने हैदराबाद के लाल बहादुर स्टेडियम, हैदराबाद से कोच नानी प्रसाद से अपना शुरुआती प्रशिक्षण लिया था। माता-पिता दोनों के

बैडमिंटन खिलाड़ी होने के कारण सायना का बैडमिंटन की ओर रुझान शुरू से ही था। ओलिम्पिक खेलों में महिला एकल बैडमिंटन का कांस्य पदक जीतने वाली वे देश की पहली महिला खिलाड़ी हैं। उन्होंने 2006 में एशियाई सैटलाइट प्रतियोगिता भी जीती है। उन्होंने 2009 में इंडोनेशिया ओपन जीतते हुए सुपर सीरीज़ बैडमिंटन प्रतियोगिता का खिताब अपने नाम किया। यह उपलब्धि उनसे पहले किसी अन्य भारतीय महिला को हासिल नहीं हुई थी। दिल्ली में आयोजित राष्ट्रमंडल खेलों में उन्होंने स्वर्ण पदक हासिल किया। अप्रैल 2015 में आधिकारिक रूप से उनकी विश्व रैंकिंग 1 घोषित की गई। इस मुकाम तक पहुँचने वाली वे प्रथम भारतीय महिला बैडमिंटन खिलाड़ी बनीं। उनके जीवन पर आधारित फ़िल्म 'सायना' में अभिनेत्री परिणीति चोपड़ा साइना की भूमिका में थी।

मैंगते चंग्नेइजैंग मैरी कॉम (महिला मुक्केबाज)

मैंगते चंग्नेइजैंग मैरी कॉम (जन्म: 1 मार्च 1983) जिन्हें मैरी कॉम के नाम से भी जाना जाता है, एक भारतीय महिला मुक्केबाज हैं। वे मणिपुर राज्य की मूल निवासी हैं। मैरी कॉम 8 बार विश्व

मुक्केबाजी प्रतियोगिता की विजेता रह चुकी हैं। उन्होंने वर्ष 2010 के एशियाई खेलों में कांस्य पदक, 2012 ग्रीष्मकालीन ओलंपिक में कांस्य पदक एवं 2014 के एशियाई खेलों में उन्होंने स्वर्ण पदक हासिल किया। दो वर्ष के अध्ययन प्रोत्साहन अवकाश के बाद उन्होंने वापसी करके लगातार चौथी बार विश्व गैर-व्यावसायिक बॉक्सिंग में स्वर्ण जीता। उनकी इस उपलब्धि से प्रभावित होकर एआइबीए ने उन्हें मॅग्नीफ़िसेन्ट मैरी (प्रतापी मैरी) का संबोधन दिया। उनके जीवन पर 'मैरी कॉम' फिल्म भी बनी जिसका प्रदर्शन 2014 में हुआ। इस फिल्म में उनकी भूमिका प्रियंका चोपड़ा ने निभाई।

मैरी कॉम ने सन् 2001 में प्रथम बार नेशनल वुमन्स बॉक्सिंग चैंपियनशिप जीती। अब तक वह 10 राष्ट्रीय खिताब जीत चुकी हैं। बॉक्सिंग में देश का नाम रोशन करने के लिए भारत सरकार ने वर्ष 2003 में उन्हें अर्जुन पुरस्कार से सम्मानित किया एवं वर्ष 2006 में उन्हें पद्मश्री से सम्मानित किया गया। 29 जुलाई, 2009 को वे भारत के सर्वोच्च खेल सम्मान राजीव गाँधी खेल रत्न पुरस्कार के लिए (मुक्केबाज विजेंदर कुमार तथा पहलवान सुशील कुमार के साथ) चुनी गईं।

सानिया मिर्ज़ा (महिला टेनिस खिलाड़ी)

सानिया मिर्ज़ा (जन्म: 15 नवम्बर 1986, मुंबई, महाराष्ट्र) भारत की टेनिस खिलाड़ी हैं। लगातार एक दशक अर्थात वर्ष 2003 से 2013 तक वह महिला टेनिस संघ के एकल और डबल में शीर्ष भारतीय टेनिस खिलाड़ी के रूप में अपना स्थान बनाए रखने में सफल रही। मात्र 18 वर्ष की आयु में वैश्विक स्तर पर चर्चित होने वाली इस खिलाड़ी को भारत सरकार द्वारा वर्ष 2004 में अर्जुन पुरस्कार एवं

वर्ष 2006 में 'पद्मश्री' से सम्मानित किया गया। वे यह सम्मान पाने वाली सबसे कम उम्र की खिलाड़ी हैं। 22 जुलाई 2014 को भारत की इस नंबर एक महिला टेनिस खिलाड़ी को नवगठित तेलंगाना राज्य की ब्रांड एम्बेसडर बनाया गया।

बछेंद्री पाल (पर्वतारोही)

बछेंद्री पाल माउंट एवरेस्ट पर चढ़ने वाली प्रथम भारतीय महिला है। वर्ष 1984 में इन्होंने माउंट एवरेस्ट फतह किया था। बछेंद्री पाल का जन्म नाकुरी उत्तरकाशी, उत्तराखंड में सन् 1954 को हुआ। बछेंद्री पाल के लिए पर्वतारोहण का पहला मौ. का 12 साल की उम्र में तब आया, जब उन्होंने अपने स्कूल के सहपाठियों के साथ 400 मीटर की चढ़ाई की। 1984

में भारत का चौथा एवरेस्ट अभियान शुरू हुआ। इस अभियान में बछेंद्री समेत 7 महिला और 11 पुरुषों को शामिल किया गया था। इस टीम द्वारा 23 मई 1984 को 29,028 फुट (8,848 मीटर) की ऊंचाई पर 'सागरमाथा (एवरेस्ट)' पर भारत का झंडा लहराया गया था। इसके साथ एवरेस्ट पर सफलतापूर्वक क़दम रखने वाले वे दुनिया की 5वीं महिला बनीं। भारतीय अभियान दल के सदस्य के रूप में माउंट एवरेस्ट पर आरोहण के कुछ ही समय बाद इन्होंने इस शिखर पर महिलाओं की एक टीम के अभियान का भी सफल नेतृत्व किया। वर्ष 2019 में उन्हें पद्म भूषण से सम्मानित किया गया ।

मेजर प्रिया झिंगन (महिला थल सेना अधिकारी)

प्रिया झिंगन भारतीय थलसेना में कमीशन होने वाले महिला अधिकारियों के पहले बैच की सिल्वर मैडलिस्ट कैडेट हैं। अधिकारी प्रशिक्षण अकादमी, चेन्नई में प्रशिक्षण पूरा होने पर उन्होंने इंफेंटरी में शामिल होने का अनुरोध किया, लेकिन सेना के शीर्ष अधिकारियों द्वारा इसे खारिज कर दिया गया। कानून में स्नातक होने के कारण उन्हें कोर ऑफ जज एडवोकेट जनरल में शामिल किया गया। जज एडवोकेट जनरल में दस साल की सेवा के बाद प्रिया झिंगन 2002 में एक मेजर के पद से सेवानिवृत्त हुईं। प्रिया झिंगन शुरू से ही सेना में शामिल होने वाली महिलाओं के लिए मजबूती से वकालत करती रही है। सेवानिवृत्ति के बाद, मेजर झिंगन ने हरियाणा न्यायिक सेवाओं के लिए परीक्षा पास की, लेकिन न्यायिक सेवा में शामिल नहीं हुई। इसके बाद उन्होंने पत्रकारिता और जनसंचार में स्नातक किया और गंगटोक में एक साप्ताहिक 'सिक्किम एक्सप्रेस' का संपादन करने लगी।

कैप्टन दुर्बा बनर्जी (महिला कमर्शियल पायलट)

कैप्टन दुर्बा बनर्जी ने सभी रूढ़ियों को तोड़ते हुए हवा में उड़ान भरी और पहली महिला कमर्शियल पायलट बनीं। उन्होंने भारतीय हवाई सर्वे के डकोटा हवाई जहाज को डीसी3 पाइलट के तौर पर उड़ाते हुए अपने कैरियर की शुरुआत की। फिर वे 1967 में कोलकाता में इंडियन एयरलाइंस में शामिल हो गई और 1988 तक उड़ान भरती रहीं। दुर्बा बनर्जी को सबसे अधिक 9000 घंटे उड़ान भरने वाली महिला पाइलट होने का श्रेय प्राप्त है। उन्हें टोर्नेडो ए-200, एयरबस 300 और बोइंग 737 को उड़ाने का अनुभव प्राप्त हुआ है। कैप्टन दुर्बा बनर्जी ने सच में साबित किया कि हौंसलों की उड़ान आसमान को भी पार कर सकती है। जब महिलाओं को घर की दहलीज़ के बाहर कदम रखने के लिए सोचना पड़ता था, तब उन्होंने महिलाओं की उम्मीदों को पंख लगाने का साहस दिखाया।

निखत ज़रीन (महिला मुक्केबाज)

निखत ज़रीन का जन्म 14 जून 1996 में तेलंगाना के निजामाबाद में हुआ था। 13 साल की उम्र में निखत ज़रीन के मन में पहली बार बॉक्सिंग का ख्याल तब आया जब उसने अपने चाचा को बॉक्सिंग करते हुए देखा था। उसने भी मन ही मन तय कर लिया था कि वह बड़ी होकर बॉक्सिंग ही करेगी। शुरू में तो यह जानकर निखत के परिवार को अजीब लगा, लेकिन बाद में उसके पिता ने उसे इस बात की मंजूरी दे दी और उसकी हौसला-अफ़जाई भी की। 2011 में छोटी सी उम्र में निखत ज़रीन ने तुर्की जाकर यूथ वर्ल्ड बॉक्सिंग चैंपियनशिप में भाग लेकर गोल्ड मेडल जीता। उन्होंने 2022 में इस्तांबुल और 2023 में नई दिल्ली में आयोजित आईबीए महिला विश्व बॉक्सिंग में स्वर्ण पदक प्राप्त किया। उन्होंने 2022 में कॉमनवेल्थ गेम्स में भी स्वर्ण पदक प्राप्त किया। हमें गर्व है कि निखत ज़रीन बैंक ऑफ इंडिया परिवार की सदस्य हैं तथा वर्तमान में तेलंगाना अंचल में तैनात है।

महिला वीरांगनाओं की सूची काफी लम्बी है। हमने केवल कुछ महिलाओं की बारे में यहाँ चर्चा की है तथा अंतरराष्ट्रीय महिला दिवस के उपलक्ष्य में लीक से हटकर कार्य करने वाली महिलाओं को श्रद्धा ज्ञापित करने का प्रयास किया है।

प्रधान कार्यालय द्वारा आयोजित अखिल भारतीय निबंध प्रतियोगिता में
प्रथम पुरस्कार प्राप्त निबंध

जी-20 सम्मेलन 2023 के मंत्र "वसुधैव कुटुम्बकम्" की अवधारणा में डिजिटलीकरण और तकनीक की भूमिका

प्रियंका राठौर
विपणन अधिकारी
आंचलिक कार्यालय
जबलपुर अंचल

1 - प्रस्तावना-

भारत एक प्रगतिशील देश है जो निरंतर विकास पथ पर आगे बढ़ रहा है। भारत देश हमेशा से ही अपनी विविधतापूर्ण संस्कृति एवं समृद्ध इतिहास के लिए जाना जाता रहा है। 5000 साल पुरानी भारतीय सभ्यता 'वसुधैव कुटुम्बकम्' का सर्वोत्कृष्ट रूप है। मूलतः 'वसुधैव कुटुम्बकम्' की संकल्पना भारतवर्ष के प्राचीन ऋषि-मुनियों द्वारा की गई थी, जिसका उद्देश्य था- पृथ्वी पर मानवता का विकास।

'वसुधैव कुटुम्बकम्' मंत्र के साथ तकनीक के सहारे हमारा देश कई ऊंचाइयों को छू रहा है। भारत का ये मंत्र तकनीक के कारण आज साकार होता दिखाई दे रहा है और पूरा विश्व इसका अनुसरण कर रहा है। भारत की जी-20 अध्यक्षता का प्रमुख तत्व इसे जनभागीदारी के माध्यम से जनता के करीब ले जाना और इसे 'जनता का जी-20' बनाना है। इसी वजह से हमारे वर्तमान प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी ने जी-20 शिखर सम्मेलन में हिस्सा लेने के लिए बाली रवाना होने से पहले कहा कि भारत 'वसुधैव कुटुम्बकम्' के मूल्यों को लेकर चलेगा। जी-20 अध्यक्षता का विषय 'वसुधैव कुटुम्बकम्' रखा गया है, जिसका शाब्दिक अर्थ है - पूरी दुनिया एक परिवार है।

2 - जी-20 सम्मेलन 2023

भारत में हमेशा से ही कई बड़े बड़े सम्मेलन आयोजित होते रहे हैं। इस बार का 18वां जी-20 शिखर सम्मेलन भारत की राजधानी दिल्ली में 9-10 सितंबर 2023 को आयोजित होगा। भारत के लिए जी-20 की अध्यक्षता अमृतकाल की उपलब्धि है। जी-20 की अध्यक्षता भारत को अंतरराष्ट्रीय महत्व के मुद्दों पर वैश्विक एजेंडे में योगदान करने का एक विशिष्ट अवसर प्रदान करती है।

जी-20 की स्थापना 1999 में एशियाई वित्तीय संकट के बाद वित्त मंत्रियों और केंद्रीय बैंकों के गवर्नरों के लिए वैश्विक आर्थिक और वित्तीय मुद्दों पर चर्चा करने हेतु एक मंच के रूप में की गई थी। 2007 के वैश्विक आर्थिक और वित्तीय संकट के मद्देनजर जी-20 को राष्ट्राध्यक्षों/शासनाध्यक्षों के स्तर तक उन्नत किया गया था, और 2009 में इसे "अंतरराष्ट्रीय आर्थिक सहयोग हेतु प्रमुख मंच" के रूप में नामित किया गया था।

'ग्रुप ऑफ ट्वेंटी' (जी-20) में 19 देश (अर्जेंटीना, ऑस्ट्रेलिया, ब्राजील, कनाडा, चीन, फ्रांस, जर्मनी, भारत, इंडोनेशिया, इटली, जापान, कोरिया गणराज्य, मैक्सिको, रूस, सऊदी अरब, दक्षिण अफ्रीका, तुर्की, यूनाइटेड किंगडम और संयुक्त राज्य अमेरिका) और यूरोपीय संघ शामिल हैं। जी-20 सदस्य देशों में वैश्विक सकल घरेलू उत्पाद का लगभग 85%, वैश्विक व्यापार का 75% से अधिक और विश्व की लगभग दो-तिहाई आबादी है।

इस बार का जी-20 लोगो भारत के राष्ट्रीय ध्वज के जीवंत रंगों - केसरिया, सफेद और हरे, एवं नीले रंग से प्रेरित है। इसमें भारत के राष्ट्रीय पुष्प कमल को पृथ्वी ग्रह के साथ प्रस्तुत किया गया है जो चुनौतियों के बीच विकास को दर्शाता है। पृथ्वी जीवन के प्रति भारत के पर्यावरण-अनुकूल दृष्टिकोण को दर्शाती है, जिसका प्रकृति के साथ पूर्ण सामंजस्य है। जी-20 लोगो के नीचे देवनागरी लिपि में भारत लिखा है।

3 - "वसुधैव कुटुम्बकम्" का अर्थ -

'वसुधैव कुटुम्बकम्' में वसुधा का अर्थ है- पृथ्वी और कुटुम्ब का अर्थ हैं- परिवार, कुनबा । इस प्रकार 'वसुधैव कुटुम्बकम्' का अर्थ हुआ- पूरी पृथ्वी ही एक परिवार है और इस पृथ्वी पर रहने वाले सभी मनुष्य और जीव-जन्तु एक ही परिवार के हिस्से

हैं। अनिवार्य रूप से, यह विषय सभी प्रकार के मानवीय जीवन मूल्यों, पशु-पक्षी, पौधे, सूक्ष्मजीव और पृथ्वी एवं व्यापक ब्रह्मांड के परस्पर संबंधों को प्रकट करता है।

यद्यपि यह एक प्राचीन अवधारणा है, किन्तु आज यह पहले से भी अधिक प्रासंगिक है। हम सभी जानते हैं कि मनुष्य एक सामाजिक प्राणी है और समाज की सबसे प्रथम कड़ी होता है- परिवार। परिवार लोगों के एक ऐसे समूह का नाम है जो विभिन्न रिश्ते-नातों के कारण भावनात्मक रूप से एक-दूसरे से जुड़े रहते हैं। ऐसा नहीं है कि उनमें कभी लड़ाई-झगड़े नहीं होते या वैचारिक मतभेद नहीं होते, परन्तु इन सबके बावजूद वे एक-दूसरे के दु:ख-सुख के साथी होते हैं।

पृथ्वी महाद्वीपों में, महाद्वीप देशों में और देश राज्यों में विभक्त हैं। कहने को तो यह धरती का विभाजन है और यह आवश्यक भी लगता है, परन्तु प्रत्येक स्तर के विभाजन के साथ ही मनुष्य की संवेदनाएँ भी बंटी हैं। आज एक सामान्य व्यक्ति की प्राथमिकता का क्रम परिवार, मोहल्ले से शुरू होता है और उसका अन्त देश या राष्ट्र पर हो जाता है। देखा जाए तो आधुनिक समय में 'वसुधैव कुटुम्बकम्' ग्रन्थों-पुराणों में वर्णित एक अवधारणा मात्र बनकर रह गई है। ऐसे समय में भारत में होने वाले जी-20 सम्मेलन का विषय 'वसुधैव कुटुम्बकम्' पूरी दुनिया के एक परिवार होने को दर्शाता है।

भारत दुनिया के प्रमुख चार धर्मों का घर है। एक देश के रूप में भारत अखंड रहा है और कभी भी विभाजन के बारे में नहीं सोचा। भारत का विश्व के एक परिवार होने का दर्शन, प्राचीन काल से भारतीय सभ्यता का अभिन्न अंग रहा है। एसे मूल्यों के साथ भारत हमेशा ही "एक धरा, एक परिवार और एक भविष्य" के अपने संकल्प की ओर अग्रसर रहा है।

4 - डिजिटलीकरण और तकनीक का महत्व -

डिजिटल तकनीक की हमारे जीवन में बहुत अहम भूमिका है। आज तकनीक के बिना कोई भी कार्य संभव होना बहुत ही कठिन है। डिजिटलीकरण और तकनीक मानव जीवन में क्रांति लेकर आए हैं। आज डिजिटल तकनीक के माध्यम से बड़े से बड़े कार्यों को भी हम जल्दी कर सकते हैं जिससे समय की भी बचत होती है।

डिजिटल तकनीक का उपयोग आज हर क्षेत्र में हो रहा है, जैसे कि शिक्षा, चिकित्सा, खेती, विनिर्माण आदि के क्षेत्र में। डिजिटल तकनीक के माध्यम से दूर-दराज़ के क्षेत्रों में रहने वाले विद्यार्थी भी बेहतर शिक्षा प्राप्त कर सकते हैं और विभिन्न विषयों पर ज्ञान अर्जित कर सकते हैं। आज तकनीक के माध्यम से बड़ी से बड़ी बीमारी का इलाज होना भी संभव हो गया है। हम किसी दूर बैठे डॉक्टर से भी डिजिटल तकनीक के माध्यम से अपनी बीमारी का इलाज करा सकते हैं।

किसानों के लिए भी डिजिटल तकनीक के माध्यम से खेती की प्रक्रिया पहले से बहुत आसान हो गयी है। आज किसान अपनी फसल के सही दाम की जानकारी भी टीवी, रेडियो आदि के माध्यम से प्राप्त कर सकता है। डिजिटल तकनीक की मदद से हर विषय से संबंधित जानकारी इंटरनेट पर खोज सकते हैं। निर्माण के क्षेत्र में भी तकनीक के सहारे आज बड़े से बड़े पुल, भवन आदि बनाना आसान हो पाया है।

अगर तकनीक न हो तो बहुत से देशों की अर्थव्यवस्थाओं को नुकसान पहुंचेगा। डिजिटल एवं ऑनलाइन संचार ऐसी क्रांति है जो नि:संदेह देश को प्रगति के पथ पर त्वरित गति से ले जा सकती है, लेकिन यह भी सत्य है कि हर सिक्के के दो पहलू होते हैं। अत: इस तकनीक के दुष्परिणाम भी हैं, क्योंकि सत्य यह भी है कि मर्यादा का उल्लंघन सदा ही कष्टकर होता है। कोई भी क्षेत्र हो, जब हम सीमाओं को पार करते हैं या फिर किसी तरह का अतिरेक होता है, तभी इसके दुष्परिणाम सामने आते हैं। इसलिए डिजिटल तकनीक की हमारे जीवन में बहुत अहम भूमिका है और हमें इसका हमेशा सही तरीके से उपयोग करना चाहिए।

5- "वसुधैव कुटुम्बकम्" की अवधारणा में डिजिटलीकरण और तकनीक की भूमिका -

हम सभी इस बात से अवगत हैं कि हमारा विश्व बहुत ही बड़ा है और विभिन्न तरह की भौगोलिक परिस्थितियों, संस्कृतियों और इतिहासों के आधार पर अलग-अलग देशों के रूप में विभक्त भी है। ऐसे में 'वसुधैव कुटुम्बकम्' की अवधारणा अर्थात 'समस्त पृथ्वी एक परिवार है' को संभव बनाना बहुत ही कठिन है। एक परिवार का हिस्सा होने का मतलब है - परिवार का हर सदस्य

एक दूसरे से जुड़ा है, एक दूसरे से अपने सुख-दुख बाँट रहा है। पूरे विश्व को एक परिवार बनाना सिर्फ डिजिटलीकरण और तकनीक के माध्यम से ही संभव है। इसी वजह से 'वसुधैव कुटुम्बकम्' की अवधारणा में डिजिटलीकरण और तकनीक की बहुत ही अहम भूमिका है।

आज डिजिटलीकरण और तकनीक के माध्यम से विश्व के किसी भी कोने से एक व्यक्ति दूसरे व्यक्ति से बात कर सकता है। इसका उदाहरण है सोशल मीडिया जैसे फेसबुक, व्हाट्स एप, इंस्टाग्राम, लिंकडिन आदि। इन सभी सोशल मीडिया साइट के माध्यम से हम घर बैठे विश्व के किसी भी कोने में अपने रिश्तेदारों, दोस्तों और अन्य किसी भी व्यक्ति तक अपनी बात पहुँचा सकते हैं। अपनी तस्वीर, कोई भी दस्तावेज़, वीडियो साझा कर सकते हैं। वीडियो कॉल के माध्यम से किसी से भी आमने-सामने बात कर सकते हैं।

डिजिटलीकरण और तकनीक के कारण आज बैंकिंग के क्षेत्र में भी बहुत बड़ी क्रांति आई है। ऑनलाइन निधि अंतरण ने हमारी जिंदगी बहुत ही आसान बना दी है। आज क्यूआर कोड के माध्यम से हम बिना नकद दिए भी कोई भी समान खरीद सकते हैं। अपने रिश्तेदार जो किसी दूर के शहर, देश में शिक्षा प्राप्त कर रहा है या कोई नौकरी कर रहा है तो उस तक मिनटों में बिना बैंक जाए यूपीआई के माध्यम से पैसे पहुँचा सकते हैं या पैसे मंगा सकते हैं।

आज कोई भी विद्यार्थी दुनिया के किसी भी शिक्षक से ऑनलाइन शिक्षा प्राप्त कर सकता है। गूगल और यूट्यूब के माध्यम से घर बैठे किसी भी विषय पर ज्ञान प्राप्त किया जा सकता है। टेलीविज़न तथा इंटरनेट के माध्यम से हम विश्व में हो रही किसी भी घटना की जानकारी प्राप्त कर सकते हैं।

पूरे विश्व को माला के मोती की तरह पिरोए रखने में डिजिटलीकरण और तकनीक की बहुत ही महत्वपूर्ण भूमिका है। इससे अंतरराष्ट्रीय व्यापार बहुत ही तेजी से विकसित हुआ है। आज हम किसी भी देश से वस्तुओं का आयात-निर्यात कर सकते हैं। इससे देश को तरक्की के नए अवसर प्राप्त हुए हैं। इसके माध्यम से किसी दूसरे देश की बड़ी कंपनी हमारे देश में निवेश कर सकती है।

डिजिटलीकरण और तकनीक ने रोजगार के क्षेत्र में भी बहुत से नए अवसर प्रदान किए हैं। इसके माध्यम से 'वर्क फ्रोम होम' भी संभव हो पाया है। आज भारत का एक व्यक्ति किसी दूसरे देश की कंपनी के लिए अपने घर से ही कार्य कर सकता है और पैसे कमा सकता है। रोजगार हमारे एवं अन्य सभी देशों की तरक्की के लिए बहुत ही आवश्यक है।

हाल ही में पूरा विश्व कोरोना नाम की माहमारी का सामना कर चुका है। जब पूरे देश में लॉकडाउन की समस्या थी, तब डिजिटलीकरण और तकनीक के माध्यम से ही कई कार्य संभव हो पाए थे। जब सभी स्कूल-कॉलेज बंद हो गए थे, तब ऑनलाइन कक्षाओं के माध्यम से विद्यार्थी शिक्षा प्राप्त कर पाए थे। टेलीफ़ोन के माध्यम से हम अपने परिचितों से संपर्क में रह पाए। डिजिटलीकरण और तकनीक के कारण ही पूरा विश्व सही मायने में एक परिवार बन कर इस मुश्किल परिस्थिति का सामना कर पाया।

6. उपसंहार-

भारत के मंत्र 'वसुधैव कुटुम्बकम्' अर्थात 'पूरी पृथ्वी एक परिवार' को साकार करने के लिए डिजिटलीकरण और तकनीक की बहुत ही महत्वपूर्ण भूमिका रही है। भारत में होने वाले इस बार के जी-20 सम्मेलन 2023 का विषय 'वसुधैव कुटुम्बकम्' रखने का उद्देश्य यही है कि पूरा विश्व एक परिवार के रूप में आगे बढ़े।

परिवार के हर सदस्य को एक दूसरे से जोड़े रखने में डिजिटलीकरण की भूमिका सराहनीय है। भारत में होने वाले जी-20 सम्मेलन 2023 का उद्देश्य है कि जन-जन इस सम्मेलन में भाग ले पाए और जनभागीदारी के माध्यम से इसे 'जनता का जी-20' बनाया जा सके। और यह कार्य भी डिजिटलीकरण और तकनीक से ही संभव हो सकता है।

पूरा विश्व एक परिवार के रूप में ही हर समस्या का सामना कर सकता है जैसे कि कोरोना महामारी का सामना पूरे विश्व ने एकजुट होकर किया। भारत से बहुत सी दवाइयाँ, ऑक्सीज़न, मास्क आदि दूसरे देशों में पहुँचाए गए थे। अतः हम सभी पृथ्वीवासियों को हमेशा ही एक परिवार की भाँति, एक कुटुम्ब के भाँति रहना चाहिए। तभी हम अपने पूर्वजों से प्राप्त होने वाली 'वसुधैव कुटुम्बकम्' की अवधारणा को सार्थक कर पाएंगे ।

साहित्य सृजन की धरती कानपुर

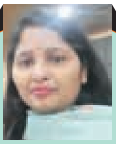

सुनीता यादव
प्रबंधक (राजभाषा)
कानपुर अंचल

कानपुर उत्तर प्रदेश राज्य के प्रमुख शहरों में से एक है। अनेक ऐतिहासिक घटनाओं और साहित्यिक गतिविधियों को समेटे यह शहर हमें कई दिलचस्प और ज्ञानवर्धक जानकारियों, कहानियों से रूबरू करवाता है। पवित्र गंगा नदी के दक्षिण तट पर बसे हुए इस नगर को हिंदी के कई प्रसिद्ध साहित्यकारों ने अपनी कर्मस्थली बनाया। कानपुर की धरती और यहाँ की आबोहवा ने साहित्यकारों और कलमकारों को साहित्य सृजन के लिए प्रेरित एवं प्रोत्साहित किया। परिणाम यह हुआ कि देश को उच्चकोटि का हिंदी साहित्य उपलब्ध तो हुआ ही, साथ ही हिंदी भाषा के विकास को भी एक गति प्राप्त हुई। कानपुर की इस धरती पर साहित्य की विभिन्न विधाओं के सृजन के जरिए हिंदी भाषा को पूरे देशभर में एक विशेष पहचान भी मिली।

हिंदी पत्रकारिता की शुरूआत होती है कानपुर की धरती पर जन्मे पंडित जुगल किशोर द्वारा। गुलामी के दौरान देश की जुबान में किसी अखबार का छपना किसी क्रांतिकारी कदम से कम नहीं था। कानपुर की धरती के लाल एवं क्रांतिकारी पंडित जुगल किशोर ने साहसिक कदम उठाते हुए कलकत्ता (वर्तमान में कोलकाता) से देश की जुबान हिन्दी में साप्ताहिक पत्र "उदन्त मार्तंड" निकाला। इस समाचार पत्र का प्रकाशन 30 मई, 1826 में किया गया। "उदन्त मार्तंड" का अर्थ होता हैं "उगता सूरज"। हिन्दी भाषा में छपने वाले इस समाचार पत्र ने यह भविष्यवाणी कर दी थी कि देश की सच्ची पत्रकारिता आम जनता की भाषा में ही हो सकती है। यही वजह है कि इस पत्र की प्रकाशन तिथि 30 मई पूरे देश में "हिंदी पत्रकारिता दिवस" के रूप में मनाई जाती है।

गणेश शंकर विद्यार्थी ने "प्रताप" नामक एक तेजस्वी साप्ताहिक पत्र को सन् 1913 में कानपुर से निकाला। इस पत्र ने देश के स्वाधीनता आंदोलन में महत्वपूर्ण भूमिका का निर्वाह किया। इस पत्र ने स्वाधीनता आंदोलन से जुड़ने के लिए देशवासियों को प्रेरित किया। इस पत्र के कारण गणेश शंकर विद्यार्थी कई बार जेल भी गए। माखनलाल चतुर्वेदी जी की देशभक्ति के रस से सराबोर प्रसिद्ध कविता "पुष्प की अभिलाषा" इसी "प्रताप' पत्र में सन् 1922 में प्रकाशित हुई थी। कानपुर में ही जन्मे मुंशी दयानारायण निगम ने "जमाना" नामक उर्दू पत्र का संपादन किया। अत: पत्रकारिता की निर्भीक, निष्पक्ष एवं तेजस्वी शुरुआत कानपुर की धरती से ही हुई।

कानपुर की धरती पर लेखन का इतिहास काफी पुराना रहा है। कहा जाता है कि रामायण के समय से ही लेखन प्रक्रिया प्रारंभ हो गई थी। महर्षि वाल्मीकि द्वारा संस्कृत में साहित्य सृजन की शुरुआत हुई। वाल्मीकि ने रामायण की रचना यहीं पर प्रारंभ की थी। यह शहर अंग्रेजों का गढ़ रहा था, इसलिए उन्होंने इस शहर को एक व्यापारिक केंद्र के रूप में भी स्थापित किया। कई मिलें यहाँ संचालित हो रही थीं और उन मिलों में काम करने वाले मजदूर-कामगारों पर अंग्रेजों द्वारा अत्याचार किए जा रहे थे। आमजनों, मजदूरों पर अत्याचार होते देख कवियों, लेखकों की कलम किस भांति शांत रह सकती थीं। साथ ही, स्वाधीनता संग्राम में अहम् भूमिका निभाने वाले इस शहर के स्वतन्त्रता सेनानियों ने साहित्यकारों को कलम उठाने के लिए प्रेरित और प्रोत्साहित किया। कानपुर को अपनी कर्मस्थली बनाने वाले साहित्यकारों में प्रसिद्ध हैं :- मुंशी प्रेमचंद, माखनलाल चतुर्वेदी, महावीर प्रसाद द्विवेदी, अटल बिहारी वाजपेयी, गोपाल दास नीरज, गिरिराज किशोर, प्रियंवद, बालकृष्ण शर्मा नवीन, गया प्रसाद शुक्ल 'सनेही', नाथूराम शर्मा शंकर, प्रताप नारायण मिश्र, सोहन लाल द्विवेदी आदि।

भारतेन्दु युग के प्रसिद्ध व्यंग्यकार प्रताप नारायण मिश्र जी की जन्मस्थली यद्यपि कानपुर से सटा हुआ शहर उन्नाव है, किन्तु उन्होंने अपने साहित्य सृजन का कार्य अपने पिता के साथ कानपुर में रहकर ही किया। अपनी प्रसिद्ध पत्रिका 'ब्राह्मण' का संपादन कानपुर से किया। उन्होंने 1891 में कानपुर में 'रसिक समाज' की स्थापना की। 'रसिक समाज' में प्रताप नारायण मिश्र ने हिंदी भाषा के विषय में लिखा था – "भाषा की उन्नति के

बिना देश की उन्नति सर्वथा असंभव है और हमारी भाषा हिंदी है। ....देश को सुधारने की पहली सीढ़ी सर्वसाधारण के मध्य देशभाषा की रुचि उपजाना है।" मिश्र जी के प्रयासों से कानपुर में कई नाट्य सभाओं और गोरक्षिणी समितियों की स्थापना हुई थीं।

माखनलाल चतुर्वेदी जी का जन्म मध्यप्रदेश में हुआ था, किन्तु उन्होंने भी कानपुर में रहकर ही अपनी लेखनी चलाई। उन्होंने "प्रभा" नामक पत्रिका का प्रकाशन कानपुर से किया। गद्य को एक विशिष्ट पहचान दिलाने वाले महावीर प्रसाद द्विवेदी जी ने न केवल अपने लेखन-कार्य को कानपुर में रहकर किया, बल्कि अन्य लेखकों को भी लेखन-कार्य हेतु प्रेरित किया। कानपुर की धरती ने द्विवेदी जी को इतना अधिक आकर्षित किया कि वे हिन्दी की प्रसिद्ध पत्रिका 'सरस्वती' का संपादन तो इलाहाबाद से किया करते थे, किन्तु लेखन-कार्य कानपुर में रहकर करते।

हिंदी साहित्य जगत में 'कथा सम्राट' के नाम से प्रसिद्ध मुंशी प्रेमचंद ने भी कानपुर को अपनी कर्मस्थली बनाया। कानपुर के मेस्टन रोड पर निवास करने वाले प्रेमचंद के घनिष्ठ मित्र मुंशी दयानारायण निगम जो जमाना पत्रिका का प्रकाशन करते थे, उनके साथ रहकर प्रेमचंद कानपुर की विषम परिस्थितियों से अवगत हुए। प्रेमचंद ने कानपुर के कारखानों में काम करने वाले मजदूरों, कामगारों की स्थितियों को काफी नजदीक से देखा था। उनके ऊपर हो रहे शोषण और उनकी स्थिति, उनके दर्द को प्रेमचंद जी ने हृदय से महसूस किया। इसके अतिरिक्त उन्होंने अंग्रेजों के शोषण के खिलाफ मजदूरों की ट्रेड यूनियनों द्वारा किए जाने वाले आंदोलनों और इन आंदोलनों को अंग्रेजों द्वारा दबाते हुए भी देखा था। प्रेमचंद ने इन मजदूरों, असहायों को अपनी लेखनी के माध्यम से आवाज दी। यहाँ की परिस्थितियों ने उनकी लेखनी को आदर्शवादी से यथार्थवादी के रूप में परिवर्तित कर दिया। उन्होंने कानपुर में ही रहकर "गबन" नामक प्रसिद्ध उपन्यास की रचना की। इस शहर की साहित्यिक गतिविधियों ने उर्दू में लेखन कार्य करने वाले मुंशी प्रेमचंद की लेखनी को हिंदी भाषा की तरफ मोड़ दिया। साहित्य साधना करने वाले प्रेमचंद "कथा सम्राट' के रूप में न केवल हिंदी साहित्य जगत, बल्कि विश्व साहित्य जगत में अमर हो गए।

कानपुर शहर ने ही सन् 1925 में पहली बार हिंदी भाषा में हुए कांग्रेस अधिवेशन को भी देखा। इस प्रकार हिन्दी भाषा के प्रयोग के दृष्टिकोण से भी कानपुर नगर अपना ऐतिहासिक महत्व रखता है, क्योंकि इसके पूर्व कांग्रेस के अधिवेशन की जितनी भी कार्यवाहियाँ हुईं, वे सभी अँग्रेजी में ही हुई थीं। कानपुर अधिवेशन की अध्यक्षता सरोजनी नायडू जी ने की और इस अधिवेशन में महात्मा गांधी जी भी कानपुर आए हुए थे। इस अधिवेशन के दौरान गणेश शंकर विद्यार्थी के कहने पर कानपुर शहर के नर्वल में निवास करने वाले श्याम लाल गुप्त पार्षद् ने देश का प्रसिद्ध झंडा गीत 'झंडा ऊंचा रहे हमारा...' की रचना की। यह गीत एक कालजयी रचना बन गया। आज देशभर में यह गीत देशवासियों द्वारा बड़े ही सम्मान के साथ गाया जाता है।

कानपुर की मिट्टी ने भारत के पूर्व प्रधानमंत्री अटल बिहारी वाजपेयी जी की काव्यधारा को भी सींचा। इनका इस शहर से काफी गहरा नाता था। यहाँ शिक्षा ग्रहण करने के साथ ही वे गंगा किनारे अपनी कविता की पंक्तियाँ सुनाया करते थे। इनके राजनीतिक जीवन की शुरूआत भी इसी शहर से हुई। वाजपेयी जी की "बाधाएं आती है आएं, घिरे प्रलय की घोर घटाएँ, पावों के नीचे अंगारे, सिर पर बरसें यदि ज्वालाएं, निज हाथों में हँसते-हँसते, आग लगाकर जलना होगा, कदम मिलाकर चलना होगा" जैसी अनेक कविताएँ आज भी हमें आगे बढ़ने के लिए प्रेरित करती हैं।

हिंदी के प्रसिद्ध साहित्यकार गिरिराज किशोर जब कानपुर शहर में असिस्टेंट एम्प्लॉयमेंट ऑफिसर के पद पर स्थापित हुए तो उन्होंने अपने कार्यकाल के दौरान कानपुर के कर्मचारियों की स्थिति पर "चिड़ियाघर" नामक उपन्यास लिखा। कहा जाता हैं कि असिस्टेंट एम्प्लॉयमेंट ऑफिसर के पद पर उन्होंने कई शहरों में काम किया, किन्तु कानपुर शहर में जब वे आए, तो यहीं के होकर रह गए। उनके द्वारा लिखित उपन्यास "पहला गिरमिटिया" साहित्य जगत में काफी लोकप्रिय रहा है। उन्होंने कानपुर से निकलने वाली तिमाही पत्रिका "अकार" का संपादन भी किया था। उनके द्वारा कही गयी बातें कि "सख्त से सख्त बात शिष्टाचार के घेरे में रहकर भी कही जा सकती है। हम लेखक हैं। शब्द ही हमारा जीवन है और हमारी शक्ति भी। उसको बढ़ा सकें तो बढ़ाएँ, कम न करें। भाषा बड़ी से बड़ी गलाजत ढंक लेती है।" भाषा हमें विनम्र बनने हेतु प्रेरित करती है।

आजादी के बाद प्रसिद्ध लेखक प्रियंवद का कथा संग्रह "खरगोश" साहित्य जगत में काफी चर्चित रहा। कानपुर

के कहानीकारों में प्रसिद्ध हुए हैं - कामतानाथ, ललित मोहन अवस्थी, सुशील शुक्ल, ऋषिकेश आदि।

कानपुर के औद्योगिक परिवेश ने केदारनाथ अग्रवाल को निम्न कविता लिखने के लिए प्रेरित किया कि :-

"कानपुर की सारी सत्ता-
श्रमजीवी की ही सत्ता है!
कानपुर की सारी माया
श्रमजीवी की ही माया है!!

(केदारनाथ अग्रवाल कृत कविता 'कानपुर' कविता से)

प्रसिद्ध कवि गोपालदास नीरज ने कानपुर के प्रति अपने लगाव एवं अपनेपन को "कानपुर के नाम पाती" शीर्षक कविता के माध्यम से व्यक्त किया है :

कानपुर! आह! आज याद तेरी आई फिर
स्याह कुछ और मेरी रात हुई जाती है,
आँख पहले भी यह रोई थी बहुत तेरे लिए
अब तो लगता है कि बरसात हुई जाती है।

कानपुर के सामाजिक, सास्कृतिक एवं औद्योगिक परिवेश ने जहां आजादी के पूर्व साहित्यकारों को साहित्य सृजन हेतु प्रेरित किया, वहीं आजादी के बाद भी अनेक साहित्यकारों को साहित्य सृजन हेतु प्रेरित कर रहा है। कहानी, नाटक, उपन्यास, पत्रकारिता आदि कई साहित्यिक विधाओं में साहित्य सेवा का सिलसिला आज भी यहाँ जारी है। पूर्ण विश्वास है कि साहित्य सृजन की यह धारा सदियों तक अनवरत इसी प्रकार बहती रहेगी।

नारी

नारी समाज का आधा हिस्सा जरूर है, मगर क्या वो अपने आधे हिस्से पर स्वतंत्र हैं?

यह सवाल जब उससे पूछा गया तो सबसे पहले उसने अपना फोन उठाया। फिर अपने नर की जन्म-तिथि का पासवर्ड डालकर अपने चहेते नर को फोन मिलाया और फिर बोली, मैं तो सशक्त हूँ, मेरे पति बोलते हैं।

क्या नारी अपने अधिकारों को समझती है?

यह सवाल सुनकर नारी बोली कि उसके पिता, भाई और उसके नर ने उसको पूरी तरह उसके अधिकारों के बारे में जानकारी दी है।

क्या नारी आर्थिक तौर पर आजाद है?

नारी बोली - हां, मैं तो अपने वेतन का 30% हिस्सा अपने नर को देती हूँ और 30% अपने पिता को देती हूँ। बाकी 40% अपने भाई को दे देती हूँ क्योंकि वो अभी अच्छी नौकरी की तलाश में घर पर बैठा है। ये पैसे मैं अपनी पूर्ण सहमति से अपने पति से पूछ कर देती हूँ।

क्या नारी समाज में सुरक्षित है?

यह सुनते ही नारी बोल पड़ी, - हां बिल्कुल, मगर मैं सूरज ढलने से पहले घर चली आती हूँ क्योंकि मुझे अंधेरे से डर लगता है और मेरे घर वाले मेरी फिक्र करते हैं।

क्या नारी को समान अवसर प्राप्त होते हैं?

हां बिल्कुल, नारी बोली। समान अवसर हम सबको मिलते हैं, वो बात अलग है कि सिर्फ 10% उच्च पदों पर ही महिलाएं हैं। बाकी महिलाएं शायद मेहनत ही नहीं करती होंगी।

क्या समाज में नारी और नर बराबर हैं?

नारी बोली - हां बिल्कुल, हम नर के समान हैं क्योंकि सारे इश्तेहारों और चलचित्रों के गानों में नारी अपने दिमाग की वजह से दिखाई जाती हैं, न कि केवल अपनी सुंदरता के कारण।

ये सब बोलते ही, नारी के पिता का फोन आया कि शाम हो रही है और घर पर भाई को भूख लगी है, और पति भी दफ्तर से घर आ गए उन्हें भी चाय चाहिए। नारी ने अपना सामान उठाया और अपने पति से मांगे पैसों से टैक्सी कर घर चली गयी।

नेहा कश्यप
अधिकारी
आंचलिक कार्यालय
रायगड अंचल

पढ़ने की कला

इन्द्रा सिंह
राजभाषा अधिकारी
हजारीबाग अंचल

किसी भी पुस्तक, ग्रन्थ एवं लेखन सामग्री को पढ़ने का अपना एक तरीका होता है। पढ़ना भी एक तरह की कला है। यह सुनने में बहुत आश्चर्यजनक लगेगा कि हम में से बहुत लोगों को ठीक से पढ़ना नहीं आता।

किसी अध्याय के पैराग्राफ को पढ़कर विस्तारपूर्वक नहीं बता सकते कि आपने क्या पढ़ा था। बड़े आश्चर्य की बात है कि इस परीक्षा में बहुत लोग विफल हो जाते हैं। आप लोग देखते होंगे कि कुछ व्यक्ति सरसरी तौर पर पढ़कर भी, जो मुख्य बिंदु हैं, उन्हें समझ लेते हैं और कुछ व्यक्ति बहुत ध्यान से बहुत देर तक पढ़कर भी सारांश नहीं समझ पाते। इससे यह स्पष्ट है कि पढ़ने का भी एक सही तरीका होता है।

पढ़ने की कुछ महत्वपूर्ण विधियाँ :

1. **रुचिपूर्वक पढ़ना:-** किसी भी काम का यदि पूरा लाभ उठाना है तो आपकी रुचि उसमें होनी चाहिए। यदि हम किसी पाठ्य-सामग्री को बिना शौक, बेमन से पढ़ते हैं तो निश्चय ही वह समय की बर्बादी है। इसलिए पढ़ने के लिए उस पाठ्य-सामग्री की विषयवस्तु में आपकी रुचि अवश्य होनी चाहिए।
2. **उद्देश्य के साथ पढ़ना:-** यदि आप चाहते हैं कि आपका पढ़ना लाभदायक हो, तो आप अपने पढ़ने का एक निश्चित उद्देश्य निर्धारित करें। एक निश्चित उद्देश्य ही पढ़ने के लिए एक प्रबल आवेग और मन को एकाग्र करने में सहायता भी करेगा।
3. **सक्रिय होकर पढ़ना:-** अधिकांश लोग मस्तिष्क को क्रियात्मक रूप से सक्रिय कर पढ़ाई नहीं करते। पढ़ने के साथ-साथ उस पर विचार करना भी आवश्यक है। यदि पढ़ने के साथ-साथ विचार करने की क्रिया न हो तो उसका प्रभाव स्थायी नहीं होगा, वह उसी प्रकार फिसल जायेगा जैसे चिकने घड़े के उपर से पानी।
4. **पढ़ना और सोचना:-** सोचना, पढ़ने को गुणकारी बनाने के लिए नितांत आवश्यक है। पढ़ना आरम्भ करने से पहले सोचा तो जाए ही, पढ़ने के दौरान और पढ़ना समाप्त हो जाने के बाद भी सोचा जाना जरूरी है। उदाहरणार्थ पैराग्राफ पढ़ने के बाद आप थोड़ा रुक जाइए, लेखक के तर्क और प्रतिपादन को समझिए, उसके मुख्य विचारों को चुन लीजिए, ऐसा करने से विचार स्पष्ट हो जाते हैं और उन्हें अच्छी तरह से अपनी स्मृति में जमा करने में सहायता मिलती है। किसी पुस्तक को पढ़ लेने के बाद अलग रखकर उसके बारे में विचार करें, बल्कि उसमें जो कुछ पढ़ा हो, उसे संचय करने की आदत डालिए।
5. **पढ़ने की गति:-** पढ़ने की क्रिया में पढ़ने की गति की भी एक महत्वपूर्ण भूमिका होती है। हमें गति का बखूबी ध्यान रखना चाहिए। पढ़ते समय आपका ध्यान पढ़ने पर ही होना चाहिए, न कि इस ओर कि किस प्रकार उस पाठ्य-सामग्री को जल्द से जल्द खत्म कर दिया जाए। साथ ही पठन क्रिया हद से अधिक धीमी भी नहीं होनी चाहिए। पढ़ने की गति इस प्रकार रखें कि इसके कारण समझने का बलिदान कदापि न हो।
6. **शब्द-भंडार बढ़ाना:-** किसी भी पाठ्य-सामग्री को पढ़कर समझने के बीच एक बहुत बड़ी बाधा बनती है परिचित शब्दों की संख्या में कमी अथवा मुहावरे और उनके अर्थ से अनभिज्ञता। इससे बचने का यही उपाय है कि अपने शब्द भंडार को विस्तृत करें।
7. **पढ़ने का यंत्र-विज्ञान:-** आपने गौर किया होगा कि पढ़ते वक़्त आँखें पाठ्य-सामग्री पर बिना रुके हुए नहीं चलती है, वरन रुकते और विश्राम लेते हुए चलती हैं। एक कम पढ़ा-लिखा आदमी किसी अनुच्छेद को कदाचित एक-एक करके

धीरे-धीरे पढ़ता है, लेकिन एक कुशल पाठक एक बार में समूचे वाक्य को पढ़ लेगा और केवल पढ़ेगा ही नहीं, इसका अर्थ भी साथ-साथ समझ लेगा। इससे स्पष्ट है कि जितनी जल्दी शब्दों के समूह को आँखें देखती हैं उतनी जल्दी ही मस्तिष्क समझ भी लेता है। अतः पढ़ते वक्त अधिकाधिक शब्द-समूह को एक साथ में देख लेने का प्रयास करें।

8. **नोट बनाने की आदत:-** पढ़ने को गुणकारी बनाने के लिए आवश्यक है कि आप जो कुछ भी पढ़ें, उनमें से उत्कृष्ट और महत्वपूर्ण वाक्यों को नोट कर लेना चाहिए और एक स्मरण-पुस्तिका बनाकर उसमें लिख लेना चाहिए।

9. **योजना बनाकर पढिए:-** बिना वजह इधर-उधर की चीजें पढ़ने अथवा बिना किसी योजना के पढ़ने से मनोरंजन अवश्य होता है, लेकिन इससे समय व्यर्थ होता है; साथ ही मानसिक उन्नति भी नहीं होती। इसलिए बुद्धिमानी इसी में है कि आप पढ़ने के लिए योजना तैयार कर लें और उसी के अनुसार अध्ययन करें।

क्यों ऐसे नियम बनाएं

क्यों ऐसे नियम बनाएं ?
बेटियां मां के पास नहीं रह सकतीं,
बेटियां भी तो आखिर,
अपनी मां की जान होती हैं।

क्यों ऐसे नियम बनाएं ?
शादी के बाद वे दूसरे घर चली जाती हैं,
बेटियां भी तो बेटों सा कर गुजरती हैं,
फिर क्यों न, हर शाम लौट,
वो भी अपनी मां को देखती हैं ?

क्यों ऐसे नियम बनाएं ?
बेटियों के पैसे लेने से मां कतराती हैं,
समय पर तो बेटियां भी
अपनी मां के आंसू बन जाती हैं।

क्यों ऐसे नियम बनाएं ?
दूसरे घर की परेशानी में उलझकर,
बेटियां मायका भूल जाती हैं।
दूर रहकर क्या वे
अपनी मां की परेशानी न समझ पाती हैं ?

क्यों ऐसे नियम बनाएं ?
बेटियां हर वक्त उसके
हाथ का साथ बन पाती हैं, आखिर वे भी तो,
हर बात को बिन कहे ही समझ जाती हैं।
भगवान !
बस इस नियम को थोड़ा सा ही बदलना
किसी भी बेटी को अपनी मां से दूर न करना,
आपके बाद एक मां ही तो होती है,
जो बच्चों का मन बिन कहे पढ़ लेती हैं।

एक मां ही तो होती है,
कितनी भी तबियत खराब हो,
खुद को तंदुरुस्त ही बताती है ?
बच्चों को समझते-समझते,
अपने सपने भूल जाती है।
बना तो दिया आप सा एक और,
मगर आपके दूसरे रूप की पूजा
ये दुनिया कहां कर पाती है।

मां को तो आपने ऐसा गढ़ डाला भगवन,
चाहे कितना भी लिख लो,
हर किताब, हर कविता
अधूरी ही रह जाती है
अधूरी ही रह जाती हैं।।

प्रियंका कुमारी
प्रबंधक
कॉर्पोरेट सेवाएँ विभाग
मुंबई (उत्तर) आंचलिक कार्यालय

डिजिटल बैंकिंग और भाषा

तीस्ता रथ
मुख्य प्रबंधक
अलिपुर शाखा
कोलकाता अंचल

डिजिटल बैंकिंग इंटरनेट कनेक्शन द्वारा समर्थित ऑनलाइन बैंकिंग है। ग्राहक स्मार्टफोन, टैब, लैपटॉप, डेस्कटॉप और एटीएम जैसे डिजिटल उपकरणों के माध्यम से अपने खातों और भुगतानों को आसानी से एक्सेस कर सकते हैं। डिजिटल बैंकिंग के लाभ कोविड महामारी की अवधि के दौरान और अधिक स्पष्ट हो गए, जब सामाजिक दूरी के कारण भौतिक शाखाओं से संपर्क नहीं किया जा सका था और जिसने लोगों को उनके घरों तक सीमित कर दिया। डिजिटल वॉलेट, बैंक ऐप और कॉन्टैक्टलेस एवं कैशलेस भुगतान की लोकप्रियता ने अधिक से अधिक लोगों को डिजिटल बैंकिंग के लाभों का एहसास कराया।

डिजिटल बैंकिंग निर्विवाद रूप से ग्राहक सेवा में एक बड़ा परिवर्तन है। डिजिटल बैंक 24x7 काम करते हैं और आपकी सुविधानुसार आपकी सेवा के लिए तैयार हैं। इस तेजी से भागती दुनिया में जहां समय ही पैसा है, उत्तरदायी सेवाएं एक वरदान हैं। फायदे चुनौतियों से अधिक हैं। डिजिटल बैंकिंग के फायदे और चुनौतियां नीचे वर्णित हैं -

डिजिटल बैंकिंग की सबसे आम विशेषताओं में शामिल हैं:

- ऐसी बैंकिंग जो एक सुरक्षित और सुविधाजनक प्लेटफ़ॉर्म के माध्यम से निर्देशित होती है।
- प्लेटफ़ॉर्म का पासवर्ड से सुरक्षित होना।
- ग्राहकों के लिए वित्तीय और गैर-वित्तीय बैंकिंग उत्पादों और सेवाओं दोनों का उपयोग करना आसान होना।
- डिजिटल बैंकिंग खाता आसानी से उपलब्ध होना।
- प्लेटफ़ॉर्म को नवीनतम अद्यतन शेष राशि, अंतिम लेन-देन और खाता विवरण के साथ ट्रैकिंग के आसान प्रबंधन का सक्षम होना।
- ऑनलाइन निधि अंतरण के लिए डिजिटल बैंकिंग सुविधाओं को बिना किसी रुकावट के एनईएफटी, आरटीजीएस और आईएमपीएस का समर्थन।
- त्वरित स्वचालित बिल प्रोसेसिंग का विकल्प होना।
- निवेश और क्रेडिट को ट्रैक कर सकते हैं।
- स्वचालित भुगतान रद्द करें।

डिजिटल भुगतान को अपनाने में कई बाधाएँ हैं। शुरुआत के लिए, भारत में बहुत से लोग अभी भी औपचारिक बैंकिंग प्रणाली से बाहर हैं। औपचारिक अर्थव्यवस्था में उन्हें शामिल करने में कई बाधाएँ हैं, जिसमें यह तथ्य भी शामिल है कि बहुत से लोगों के पास अभी तक कोई पहचान दस्तावेज नहीं थे।

कुछ सबसे गरीब और जिन तक पहुंचना मुश्किल है, अभी भी अप्रमाणित हैं। साक्षरता भी, औपचारिक प्रणालियों में शामिल करने में एक बाधा है। लगभग 75% भारतीय साक्षर हैं लेकिन कुछ राज्यों में अन्य राज्यों की तुलना में बेहतर साक्षरता है। महिलाओं की तुलना में पुरुषों का साक्षर होना भी अधिक सामान्य है।

लेकिन डिजिटल भुगतान में सबसे बड़ी बाधा यकीनन उसकी जानकारी न होना है। दुनिया भर में, लोग भुगतान के उन तरीकों को पसंद करते हैं जिनमें वे सहज महसूस करते हैं। जैसे कि हर चीज के लिए नकद भुगतान करना। ऐसे लोगों के लिए भुगतान के आधुनिक तरीकों को अपनाना बड़ा मुश्किल है। ऑनलाइन खरीदारी की अनिश्चितताएं उपभोक्ताओं के डरने का एक और कारण है। भारत के तेजी से डिजिटल अपनाने का मतलब है कि ऑनलाइन उपभोक्ता बहुत नए होंगे और चीजें बहुत अपरिचित लगेंगी।

भारतीय संविधान अपनी 8वीं अनुसूची में भारत की 22 भाषाओं को मान्यता देता है। हालाँकि, एक जनगणना के अनुसार, भारत में 750 से अधिक मातृभाषाएँ बोली जाती हैं। भारत की भाषाई विविधता असंदिग्ध है। इसलिए यह उम्मीद की जाती है कि भविष्य में भारत की क्षेत्रीय या स्थानीय भाषाएं बहुभाषी अनुवाद के साथ हावी होंगी। हालाँकि अंग्रेजी सबसे अधिक इस्तेमाल की जाने वाली भाषा है, फिर भी युवा पीढ़ी अपनी मातृभाषाओं से बहुत प्यार करती है। इसके अलावा, अधिकांश समय लोगों को कई भाषाओं को मिलाते हुए देखा जाता है, उदाहरण के लिए अंग्रेजी और हिंदी का एक साथ उपयोग करने को 'हिंग्लिश' के नाम से जाना जाता है। यह चलन केवल वर्चुअल स्पेस में समय

के साथ बढ़ेगा।

यदि हम कुछ आंकड़ों पर नजर डालें तो हमें आश्चर्यजनक बात मिलेगी, जो भारत की भाषाई विविधता का संकेत देती हैं। 2017 की एक रिपोर्ट के अनुसार, लगभग 175 मिलियन अंग्रेजी बोलने वाले लोग हैं जो इंटरनेट का उपयोग करते हैं। दूसरी ओर लगभग 234 मिलियन इंटरनेट उपयोगकर्ता हैं जो एक या अन्य भारतीय भाषाओं का उपयोग करते हैं। भारतीय भाषाओं के इंटरनेट उपयोगकर्ताओं की संख्या दोगुनी अर्थात लगभग 534 मिलियन होने की उम्मीद है, जबकि अंग्रेजी उपयोगकर्ताओं के केवल 10 प्रतिशत बढ़कर लगभग 199 मिलियन होने की संभावना है। इन आंकड़ों से यह निष्कर्ष निकालना आसान है कि उपयोगकर्ता अपनी क्षेत्रीय भाषा में सामग्री की उपलब्धता के अत्यधिक इच्छुक हैं।

वर्तमान में हम जानते हैं कि इंटरनेट पर हम जो भी सामग्री देखते हैं, उनमें से अधिकांश मुख्य रूप से अंग्रेजी बोलने वाले व्यक्तियों के लिए ड़िजाइन की गई है। हालाँकि इससे एक बहुत ही महत्वपूर्ण प्रश्न सामने आता है कि अंग्रेजी भाषा के पर्याप्त ज्ञान के बिना कोई व्यक्ति इस सामग्री का उपयोग कैसे करेगा? इस गंभीर समस्या का संभावित समाधान क्या है? इस समस्या का एक ही समाधान है और वह है समावेशिता। डिजिटल बैंकिंग उद्योग को क्षेत्रीय भाषाओं की समावेशिता बढ़ाने के लिए कदम उठाने चाहिए।

खुदरा विक्रेता और सेवा प्रदाता हिंदी और अंग्रेजी पर ध्यान केंद्रित करते हैं। बोलने वालों की संख्या के अनुसार ये दो सबसे बड़ी भाषाएं हैं। इसका मतलब है कि वे उन लाखों भारतीयों की उपेक्षा करते हैं जिनकी ये पहली भाषा नहीं है। ग्राहकों के साथ परिचित और आरामदायक जुड़ाव के लिए आवश्यक है कि उन्हें उस भाषा में संबोधित किया जाए जो वे घर पर बोलते हैं। कई भारतीय हिंदी या अंग्रेजी में काम करने में सक्षम हो सकते हैं, लेकिन वे अपनी मातृभाषा में ही सहजतापूर्वक बात करना पसंद करते हैं।

क्षेत्रीय या स्थानीय भाषा में बैंकिंग के कई लाभ हैं। जब लोग अपनी भाषा के माध्यम से संप्रेषित होते हैं तो वे सहज जुड़ाव महसूस करते हैं। कई लोग शिक्षा, काम या सेवानिवृत्ति के बाद यात्रा करते हैं। ये ग्राहक चाहते हैं कि वे जहां कहीं भी जाएं बैंकिंग सेवाओं के बारे में समान रूप से परिचित हों, भले ही उस विशेष क्षेत्र में बोली जाने वाली भाषा कुछ भी हो।

डिजिटल दुनिया में स्थानीय भाषाओं के उपयोगकर्ताओं की बढ़ती संख्या इस बात का प्रमाण है कि लोग अंग्रेजी के बजाय अपनी क्षेत्रीय भाषा में बातचीत करना पसंद करते हैं। यह सच है चाहे वे अंग्रेजी जानते हों या नहीं। भारतीय उपभोक्ताओं का दिल जीतने के लिए, वित्तीय संस्थानों को एक विविध भाषा दृष्टिकोण का उपयोग करने की आवश्यकता है जो यह सुनिश्चित करता है कि सूचना और प्रमुख दस्तावेज एक परिचित भाषा में उपलब्ध है। इसका मतलब यह भी है कि ग्राहक सेवा के विकल्प उन्हें उनकी पसंद की भाषा में उपलब्ध कराएं। केपीएमजी और गूगल द्वारा हाल ही में किए गए एक संयुक्त अध्ययन में पाया गया कि अधिकांश भारतीय अंग्रेजी में प्रकाशित सामग्री की तुलना में अपनी स्थानीय भाषा में सामग्री को अधिक विश्वसनीय मानते हैं। टाइम्स ऑफ इंडिया ने हाल ही में दावा किया था कि केंद्रीय बैंक द्वारा विनियमन होने के बावजूद अधिकांश भुगतान आवेदन और उनके बारे में जानकारी केवल कुछ ही भाषाओं में उपलब्ध हैं। केपीएमजी/गूगल अध्ययन ये बताता है कि ऑनलाइन भुगतान और अन्य डिजिटल उपकरणों की वृद्धि स्थानीय भाषाओं में उनकी उपलब्धता से जुड़ी हुई है। अत:भुगतान प्रणाली को अपनाने से पहले भारत में डिजिटल भाषा के प्रावधान में सुधार करना होगा।

इन दिनों डिजिटल बैंकिंग में बहुभाषी ऐप्स बहुत महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। यह संचार और भाषाई बाधाओं को दूर करने में मदद करने के साथ ही बैंकों को उनकी स्थानीय भाषा में लोगों से जुड़ने में सहायता करते हैं। इसके अलावा, भाषा एक बहुत ही भावनात्मक पहलू है, इसलिए जब आप लोगों से उनकी स्थानीय भाषा के माध्यम से जुड़ते हैं तो आप उनके दिलों से जुड़ जाते हैं और एक स्वस्थ ग्राहक संबंध बनाने के लिए आपको अपने ग्राहक के दिलों के करीब रहना चाहिए। स्थानीयकरण का मतलब ये भी नहीं है कि कुछ मुफ्त के अनुवाद सॉफ्टवेयरों के माध्यम से सामग्री को संसाधित कर लें। अनुवाद सॉफ्टवेयर शब्द दर शब्द अनुवाद करता है। हमें अनुवाद का कार्य मैनुअल करना होगा। उचित और सुनियोजित परियोजना प्रबंधन के माध्यम से वांछित परिणाम हासिल किए जा सकते हैं। प्रत्येक अनुवाद संक्षिप्त और सटीक होना चाहिए ताकि एक उचित संदेश दिया जा सके। डिजिटल बैंकिंग को समावेशी विकास के महत्वपूर्ण कदम के रूप मे देखा जा रहा है। किन्तु, यह विकास उन सभी व्यक्तियों को शामिल नहीं करता है जिनको प्रचलित भाषाओं की जानकारी नहीं है। अत: ऐसे में बैंकिंग संस्थाओं को इस पहलू को मुख्य रूप से अपनी नीति का हिस्सा बनाना चाहिए ।

नारी सामर्थ्य

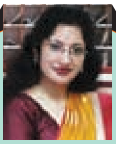

डॉ. अंकिता टंडन
मुख्य प्रबंधक (राजभाषा)
अहमदाबाद अंचल

प्रत्येक मनुष्य के जीवन में लक्ष्य का होना आवश्यक है। लक्ष्य के बिना जीवन व्यर्थ ही होता है। हर लड़की जब इस पृथ्वी पर आती है और सोचने समझने लायक होती है, अपने मन में यही सपना देखती है कि वह अपने जीवन के निर्णय स्वयं लेगी, अपने जीवन की राह स्वयं तय करेगी। लड़कियों के जीवन का लक्ष्य मात्र परिवार संभालना नहीं, बल्कि परिवार की जिम्मेदारियों के साथ-साथ अपने सपनों को, अपने लक्ष्यों को प्राप्त करना भी होना चाहिए। आज हर बेटी आत्मनिर्भर होना चाहती है।

वर्तमान समय में जिस प्रकार से नारी ने अपना सामर्थ्य प्रस्तुत किया है, उससे नि:सन्देह समाज की सोच में परिवर्तन आया है। यदि हम महिलाओं की उपलब्धियों को सूचीबद्ध करते हैं तो पाते हैं कि महिलाओं ने हर क्षेत्र में अपनी सशक्त उपस्थिति दर्ज की है। चाहे वह देश की मिसाइल सुरक्षा की कड़ी में 5000 किलोमीटर की मारक क्षमता वाली अग्नि-5 मिसाइल का सफल परीक्षण कर पूरे विश्व मानचित्र पर भारत का नाम रौशन करने वाली शख्सियत 'टेसी थॉमस' (मिसाइल वूमन) हो या भारतीय पुलिस सेवा की प्रथम वरिष्ठ महिला अधिकारी के रूप में डॉ. किरण बेदी। "भारतीय ट्रैक ऍण्ड फ़ील्ड की रानी" माने जानी वाली 101 अंतरराष्ट्रीय पदक विजेता एवं पद्मश्री व अर्जुन पुरस्कार प्राप्त करने वाली पी टी उषा हो या पांच बार विश्व मुक्केबाजी प्रतियोगिता की विजेता रह चुकी भारतीय महिला मुक्केबाज मैरी कॉम हो। सायना नेहवाल, सानिया मिर्जा जैसी कई महिलाएं खेल जगत की गौरवपूर्ण पहचान हैं। जहां बछेन्द्री पाल दुनिया की सबसे ऊंची चोटी एवरेस्ट को फतह करने वाली पहली भारतीय महिला है, वही मेरी क्यूरी विख्यात भौतिकविद और रसायनशास्त्री थीं, जिन्होंने रेडियम की खोज की थी। विज्ञान की दो शाखाओं (भौतिकी एवं रसायन विज्ञान) में नोबेल पुरस्कार से सम्मानित होने वाली वह पहली वैज्ञानिक है।

भारत जैसे शक्तिशाली देश की कमान जहां इंदिरा गांधी, प्रतिभा सिंह पाटिल के पास रही है और वर्तमान में महामहिम राष्ट्रपति के रूप में श्रीमती द्रौपदी मुर्मू द्वारा संचालित की जा रही है, वहीं लोकसभा अध्यक्ष के रूप में मीरा कुमार एवं अनेक राज्यों की महिला मुख्यमंत्री एवं राज्यपाल अपने कार्यों को सफलतापूर्वक अंजाम दे चुकी हैं। वर्तमान में हमारी वित्तमंत्री निर्मला सितारामाण जी हैं, जो पूर्व में रक्षा मंत्रालय भी संभाल चुकी हैं।

साहित्य जगत में भी महिलाओं का अभूतपूर्व योगदान रहा है। हिंदी साहित्य में ऐसी गंभीर लेखिकाओं की कमी नहीं है जिन्होंने अपनी संवेदनाओं को अभिव्यक्त करके विस्तृत साहित्य का सृजन किया है। महादेवी वर्मा, सुभद्रा कुमारी चौहान, महाश्वेता देवी, मैत्रेयी पुष्पा जैसी अनेक महिलाओं ने असामान्य परिस्थितियों में भी साहित्य जगत को उत्कृष्ट रचनाओं से सुशोभित किया है। मदर टेरेसा, रमाबाई जैसी करुणा और वात्सल्य की भावना से ओतप्रोत महिलाओं ने सामाजिक क्षेत्र की भूमिका को बहुत ही आत्मीय ढंग से निभाया है।

आज नारी मात्र ट्रेन और हवाई जहाज को ही सफलतापूर्वक नहीं चला रही, बल्कि अंतरिक्ष में भी नये कीर्तिमान बना रही है। भारतीय मूल की सुनीता विलियम्स और कल्पना चावला अंतरिक्ष पटल की खास पहचान हैं। प्रथम महिला रेलगाडी ड्राइवर सुरेखा यादव, जो कि भारत ही नहीं, वरन एशिया की भी पहली महिला ड्राइवर है।

इंदिरा नूई, नैना लाल किदवई, किरण मजुमदार शॉ, स्वाति पिरामल, चित्रा रामकृष्णा जैसी अनेक महिलाएं वाणिज्य जगत में प्रतिष्ठित कंपनियों की सीईओ बनकर बहुत ही सफलतापूर्वक अपने कार्य को अंजाम दे चुकी हैं। वहीं सौंदर्य जगत में सुष्मिता सेन, ऐश्वर्या राय, प्रियंका चोपडा आदि ने न केवल देश में, अपितु विदेशों में भी भारतीय 'ब्यूटी एंड ब्रेन' के संयोजन का सशक्त उदाहरण प्रस्तुत किया है।

यहाँ एनी बेसंन्ट का एक कथन अत्यंत उपयुक्त प्रतीत होता

है कि "स्त्रियाँ ही हैं जो लोगों की अच्छी सेवा कर सकती हैं, दूसरों की भरपूर मदद कर सकती हैं, जिंदगी को अच्छी तरह प्यार कर सकती हैं और मृत्यु को गरिमा प्रदान कर सकती हैं।"

इतनी सामर्थ्यवान होने के बाद भी अनेक बार सही राह न मिलने से स्त्रियों का स्वयं का आत्मविश्वास डगमगा जाता है और अपने सपनों को पूरा न कर पाने की कसक जीवन में हर क्षण अनुभव होती है। हर लड़की को अपने सपने जीने का पूरा हक़ है। बेटियों को सही मार्गदर्शन और परिवार का साथ मिले, उसके साथ-साथ यह भी आवश्यक है कि वे स्वयं भी अपने जीवन से जुड़े लक्ष्यों का निर्धारण करें और अपने जीवन को सही दिशा की ओर अग्रसर करें।

हम यहाँ कुछ उपायों की बात करते हैं जो महिलाओं को अपने जीवन में उतारने चाहिए, जिससे वे एक सशक्त महिला के रूप में समाज में सम्मान की अधिकारिणी बनें और अपने जीवन लक्ष्यों को प्राप्त करने में समर्थ बन सकें:

(1) **अपने हक़ के लिए संघर्ष करें:** स्त्री प्रकृति का पर्याय है। विधाता की सर्वश्रेष्ठ कृति है जो स्वयं सृष्टि की जननी है। प्रत्येक नारी को बेहतर शिक्षा, पौष्टिक आहार और उत्कृष्ट साहित्य का अधिकार है। इस अधिकार के लिए निरंतर संघर्षरत रहें।

(2) **सम्मान से समझौता नहीं:** यह भी बहुत महत्त्व रखता है कि आपके प्रति घर और बाहर कैसी भाषा का प्रयोग होता है। कोई आपसे गलत ढंग से बात न करे, इस बात का . खास ध्यान रखें। भाषा खराब है तो उसका तुरंत विरोध करें। हम जितना स्वयं के प्रति मान रखेंगे और अपने को निखारेंगे, उतना लोग हम से गलत बात और अनुचित ढंग से बात करने से बचेंगे।

(3) **ज्ञान संवर्धन पर बल देना:** किसी भी आयु में लिखना-पढ़ना न छोड़ें। एक उम्र के बाद हो सकता है कि सौन्दर्य हमारा साथ न दे, परंतु ज्ञान हमारा साथ कभी नहीं छोड़ेगा। समाज में अपनी स्थिति सुदृढ़ करने का सबसे सशक्त जरिया ज्ञान ही है। पढ़ी-लिखी, ज्ञानी महिलाओं की बातें ध्यान से सुनी जाती हैं। इसलिए बुद्धि और ज्ञान बढ़ाने वाले सभी उपायों पर ध्यान देना चाहिए।

(4) **पुरानी सोच को हावी न होने दें:** शादी एक पवित्र बंधन है जो जीवन भर साथ निभाने के लिए होता है। आपस में दु:ख-सुख बांटते हुए प्रत्येक क्षण को जीना ही असली जीवन का सार है। परंतु शादी को ही अपने जीवन का अंतिम लक्ष्य मान लेना सही नहीं है। वर्तमान समय में नारी की अपनी पहचान होनी जरूरी है।

(5) **लक्ष्य तय होने चाहिए:** हम किस आयु में अपने को किस स्थान पर देखना चाहते हैं, यह लक्ष्य तय होना चाहिए। छोटे-छोटे लक्ष्य निर्धारित करें और उन्हें पूरा करने का पुरजोर प्रयास करें।

(6) **जिम्मेदारियों और चुनौतियों को स्वीकारें:** अपनी घरेलू और सामाजिक जिम्मेदारियों को बखूबी निभाएं। नारी में अपार शक्ति है कि वह अपने घर और कार्यालय दोनों का कुशल प्रबंधन कर संतुलन बना सकती है।

(7) **समय प्रबंधन:** घर और बाहर के उत्तरदायित्वों को निभाने के लिए समय प्रबंधन बहुत आवश्यक है। घर पर हैं, तो पूरा समय अपने परिवार और घर को दें और कार्यालय के समय में अपने कार्य के प्रति पूर्णत: समर्पित रहें। समय के सही उपयोग से ही सही कार्ययोजना बन सकती है।

(8) **कुछ नया करने या सीखने के लिए उत्साही रहना:** सीखने की कोई आयु नहीं होती। ज्ञान कभी व्यर्थ नहीं जाता है। किसी भी गुण या विद्या को सीखने, उसे निखारने में संकोच नहीं करना चाहिए, चाहे वह पाक कला हो या संगीत, ड्राइविंग सीखना हो या फिर नृत्य सीखना। प्रत्येक विद्या आपको आगे बढ़ने में सहयोग ही देगी और आपके व्यक्तित्व में और अधिक निखार लाएगी।

(9) **मानसिक दृढ़ता बनाए रखें:** जीवन की मध्य अवस्था तक पहुंचते ही महिलाओं को कई प्रकार की निराशा, अवसाद और शारीरिक क्षमता में कमी से असंतोष होने लगता है। इससे पार पाने के लिए अपने को व्यस्त रखना सबसे बेहतर तरीका है। हर व्यक्ति के जीवन में उतार-चढ़ाव आते हैं। यदि पुरानी यादें तकलीफ दें, तो अपनी भावनाओं को लिखकर या कविता रूप में ढाल कर अपने को शांत किया जा सकता है। कुछ न कुछ नया सीखते रहना चाहिए।

(10) **आर्थिक रूप से सशक्त होने का प्रयास करें:** हर महिला में कोई न कोई प्रतिभा या कौशल होता है। प्रत्येक नारी अपनी क्षमता और योग्यता को पहचाने और उसे आर्थिक रूप से जोड़ने का प्रयास करे। महिलाओं का वित्तीय रूप से आत्मनिर्भर होना बहुत आवश्यक है। इससे न सिर्फ आपका समाज में सम्मान

बढ़ेगा, बल्कि आप परिवार और समाज के प्रति अपनी भूमिका भी बेहतर तरीके से निभा पाएंगीं।

(11) नए दोस्त बनाएं और पुराने दोस्तों के संपर्क में रहें: नए दोस्त बनाते रहें। नई दोस्ती, नए विचार - नई ऊर्जा लेकर आती है और पुरानी दोस्ती आपको आपके बचपन से, अपनी जड़ों से जोड़ कर रखती है। पुरानी अच्छी यादें आपको खुशी देती हैं और जीवन को नए नजरिये से देखने में सहायता करती हैं।

(12) सहायता करें और सहायता मांगें: जहां तक संभव और आपके बस में हो, अपने आसपास के लोगों की सहायता करने का प्रयास करें। जहां आपको मदद की जरूरत लगे, तब ऐसे लोगों को ध्यान में रखें तो वे वास्तविक रूप में आपकी मदद करेंगे और आपके साथ खड़े रहेंगे। सहायता माँगने में हिचकिचाएं नहीं। मानव जीवन परस्पर सामंजस्य से ही आगे बढ़ता है।

(13) सेहत पर ध्यान दें: आपको अपनी सेहत का ध्यान विशेष रूप से रखना है। आप सब कुछ प्राप्त कर सकती हैं, प्रत्येक चुनौती का सामना कर सकती हैं, यदि आप स्वस्थ्य हैं। बेहतर सेहत के लिए संतुलित खान-पान और थोड़ा सा व्यायाम आवश्यक है जो आपको स्वस्थ शरीर और बेहतर मस्तिष्क प्रदान करता है।

वर्तमान में महिलाएं हर भूमिका में बेहतरीन नजर आ रही हैं। मेरे विचार में नारी को मजबूत इरादों के साथ आगे बढ़ते रहना चाहिए और अपने अस्तित्व की सशक्त उपस्थिति दर्ज करानी चाहिए। यदि पूरी तन्मयता से ध्यान अपने कार्यों पर केन्द्रित रहे तो हमें सफलता हर हाल में मिलेगी। किसी ने कितना बढ़िया लिखा है कि -

"नारी तुम प्रेम हो, आस्था हो, विश्वास हो,
टूटी हुई उम्मीदों की एक मात्र आस हो,
हर जान का तुम ही तो आधार हो,
उठो, अपने अस्तित्व को संभालो,
केवल एक ही नहीं, हर दिन के लिए तुम ख़ास हो,
हर दिन के लिए तुम ख़ास हो।"

राजभाषा संगोष्ठी

मुजफ्फरपुर अंचल के संयोजन में कार्यरत मुजफ्फरपुर नराकास ने पावरग्रिड कॉर्पोरेशन ऑफ इंडिया लिमिटेड के सभागार में दिनांक 17.03.2023 को "बिहार का सांस्कृतिक, भाषाई और साहित्यिक विकास प्रवाह" विषय पर राजभाषा संगोष्ठी का आयोजन श्री अजय कुमार, आंचलिक प्रबंधक, बैंक ऑफ इंडिया, मुजफ्फरपुर अंचल एवं अध्यक्ष नराकास, मुजफ्फरपुर की अध्यक्षता में किया गया। मुख्य अतिथि वक्ता के रूप में मुजफ्फरपुर के उप विकास आयुक्त श्री आशुतोष द्विवेदी उपस्थित थे। भारत सरकार, गृह मंत्रालय, राजभाषा विभाग, क्षेत्रीय कार्यान्वयन कार्यालय, कोलकाता के प्रतिनिधि के रूप में सहायक निदेशक श्री निर्मल कुमार दुबे उपस्थित रहे। अन्य वक्ताओं में बैंक ऑफ इंडिया, प्रधान कार्यालय से सहायक महाप्रबंधक (राजभाषा) सुश्री मऊ मैत्रा, एम एस कॉलेज मोतीहारी के प्राचार्य प्रो. (डॉ) अरुण कुमार और लंगट सिंह कॉलेज, मुजफ्फरपुर के प्राध्यापक प्रो. राजीव कुमार झा थे। सदस्य सचिव श्री अनूप कुमार तिवारी ने भी महत्त्वपूर्ण भूमिका अदा की।

केरल की सशक्त महिलाएं - एक परिचय

पीबा एस आर
वरिष्ठ प्रबंधक (राजभाषा)
एर्णाकुलम अंचल

"यत्र नार्यस्तु पूज्यन्ते रमन्ते तत्र देवता:।"

अर्थात जहाँ स्त्रियों की पूजा होती है, वहाँ देवता निवास करते हैं।

केरल अपनी उच्च साक्षरता दर और अपने प्रगतिशील सामाजिक चिंतन के लिए जाना जाता है और केरल में महिलाओं ने राज्य के सामाजिक और सांस्कृतिक परिदृश्य को आकार देने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। केरल में महिला सशक्तिकरण का एक समृद्ध इतिहास रहा है और यह राज्य भारत में लैंगिक समानता और महिलाओं के अधिकारों को बढ़ावा देने में अग्रणी रहा है। केरल में महिलाओं ने राजनीति, शिक्षा, स्वास्थ्य और सामाजिक कार्य सहित विभिन्न क्षेत्रों में महत्वपूर्ण प्रगति की हैं। इसके अलावा, केरल की महिला साक्षरता दर 92.07% से अधिक है, जो राष्ट्रीय औसत से काफी अधिक है।

केरल की कई प्रसिद्ध और प्रभावशाली महिला व्यक्तित्व हैं जिन्होंने विभिन्न क्षेत्रों में महत्वपूर्ण योगदान दिया है। इस लेख में उनमें से कुछ वीरांगनाओं के बारे में चर्चा करेंगे।

नंगेली :

जिस केरल में आज महिलाओं ने राज्य के विकास और प्रगति में महत्वपूर्ण योगदान दिया है तथा लैंगिक समानता और महिला सशक्तिकरण को बढ़ावा देने में अन्य क्षेत्रों के लिए एक उदाहरण स्थापित किया है, उसी केरल में 19 वीं शताब्दी में तिरुवितांकूर राज्य की निचली जाति की उन महिलाओं पर स्तन कर (ब्रेस्ट टैक्स) लगाया जाता था जो अपने स्तनों को ढंकना चाहती थीं, जो स्त्री की अपनी गरिमा के प्रतीक माने जाते हैं।

नंगेली, जो नंगलियम्मा के नाम से भी जानी जाती है, तिरुवितांकूर में ईषवा समुदाय की एक महिला थी, जो स्तन कर (मुलक्करम या मुला-करम) की परंपरा या रीति के खिलाफ प्रतिरोध के अपने बहादुर कार्य के लिए प्रसिद्ध हुई। यह कर उन निचली जाति की महिलाओं के खिलाफ उत्पीड़न और भेदभाव का एक रूप था, जो पहले से ही समाज में उत्पीड़ित थीं।

नंगेली ने इस कर का भुगतान करने से इनकार कर दिया और विरोध में अपने स्तन काट लिए, जिससे उसकी मौत हो गई। उसके बलिदान और साहस ने स्तन कर की दमनकारी और भेदभावपूर्ण परंपरा पर लोगों का ध्यान आकर्षित किया और इस क्षेत्र में सामाजिक सुधार आंदोलनों को प्रेरित किया। उनकी विरासत को केरल में उत्पीड़न और अन्याय के खिलाफ प्रतिरोध के प्रतीक के रूप में याद किया जाता है।

ललिताम्बिका अंतरजनम :

ललिताम्बिका अंतरजनम केरल की एक प्रसिद्ध मलयालम लेखिका और समाज सुधारक थीं। उनका जन्म 13 नवंबर 1909 को केरल के कोल्लम शहर में हुआ था। वह एक रूढ़िवादी ब्राह्मण परिवार की बेटी थी, लेकिन अपने समाज में प्रचलित जाति व्यवस्था और अन्य सामाजिक अन्यायों का कड़ा विरोध करती थी।

उन्होंने दीपक की धीमी रोशनी में और बंद दरवाजों के पीछे अपने लेखनी चलाई। अंतरजनम की साहित्यिक रचनाएँ मुख्य रूप से महिलाओं, उनके अधिकारों और उनके संघर्षों से संबंधित मुद्दों पर केंद्रित थीं। वे अपने लेखन में महिलाओं की चिंताओं को उजागर करने में अग्रणी थीं और महिलाओं की शिक्षा और सशक्तिकरण की प्रबल समर्थक थीं। उनके प्रतिष्ठित उपन्यास 'अग्निसाक्षी' में महिलाओं के साथ होने वाले बुरे व्यवहार और अन्याय को व्यक्त किया गया है। उनकी अन्य पुस्तकों में महिलाओं के सामने मौजूद विकल्पों और समाज में एक कोर एकीकृत के रूप में उनकी भूमिका पर प्रकाश डाला गया है।

साहित्य और सामाजिक सुधार के क्षेत्र में अंतरजनम के योगदान को व्यापक रूप से मान्यता मिली है। उन्हें 1975 में उनके उपन्यास 'आग्नेयमनसु' के लिए साहित्य अकादमी पुरस्कार मिला। 1983 में उन्हें साहित्य और सामाजिक कार्य में उनके योगदान के लिए भारत के सर्वोच्च नागरिक सम्मानों में से एक 'पद्म भूषण' से सम्मानित किया गया।

लक्ष्मी एन मेनोन :

लक्ष्मी एन मेनोन एक शिक्षक, वकील, राजनीतिज्ञ और

कार्यकर्ता थीं। 1927 में इंग्लैंड में अध्ययन करते समय, वह छात्र प्रतिनिधि मंडल के सदस्य के रूप में सोवियत संघ की 10वीं वर्षगांठ संबंधी समारोह में भाग लेने के लिए मास्को गईं। वहां उनकी मुलाकात पंडित जवाहरलाल नेहरू से हुई और इस मुलाकात ने उन्हें राजनीति में प्रवेश करने के लिए प्रेरित किया। 1948 और 1950 में, उन्हें संयुक्त राष्ट्र में भारतीय प्रतिनिधि मंडल के सदस्य के रूप में नामित किया गया। उन्हें संयुक्त राष्ट्र में महिलाओं की स्थिति पर समिति के लिए नामित किया गया था और वह संयुक्त राष्ट्र महासभा में भारतीय प्रतिनिधि मंडल की प्रमुख थीं।

उन्हें 1952, 1954 और 1960 में राज्यसभा सदस्य के रूप में चुना गया। उन्होंने पंडित जवाहरलाल नेहरू और लाल बहादुर शास्त्री के मंत्रिमंडल में विदेश मामलों के स्वतंत्र प्रभार के साथ राज्य मंत्री के रूप में कार्य किया। उन्होंने बड़े पैमाने पर यात्राएं कीं और भारत की विदेश नीति को आकार देने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। जब चीन ने भारत पर हमला किया, तो पंडित नेहरू ने उन्हें दुनिया के विभिन्न देशों के लिए भारत के रुख को स्पष्ट करने हेतु भारत के रोविंग राजदूत के रूप में नियुक्त किया।

उन्हें 1957 में 'पद्मभूषण' से सम्मानित किया गया था। उन्होंने महिलाओं के बीच निरक्षरता के उन्मूलन के लिए अखिल भारतीय समिति के अध्यक्ष और 1972 से 1985 तक कस्तूरबा गांधी राष्ट्रीय स्मारक ट्रस्ट के अध्यक्ष के रूप में भी कार्य किया। मेनोन ने राजनीति के बाद अपना सक्रिय जीवन राष्ट्र के हित में समर्पित कर दिया।

अक्काम्मा चेरियान :

'तिरुवितांकूर की झाँसी की रानी' के रूप में जानी जाने वाली एक बहादुर महिला अक्काम्मा चेरियान ने स्वतंत्रता संग्राम में केरल की ओर से योगदान दिया। अक्काम्मा चेरियान केरल राज्य की एक सामाजिक कार्यकर्ता और महिला अधिकार सक्रियतावादी थीं।

अक्काम्मा चेरियान केरल में अखिल भारतीय महिला सम्मेलन के संस्थापक सदस्यों में से एक थी और उन्होंने विभिन्न सामाजिक और राजनीतिक संगठनों में सक्रिय भूमिका निभाई। वे भारतीय स्वतंत्रता आंदोलन में शामिल थी और महात्मा गांधी के साथ मिलकर काम करती थी। उन्होंने 1936 में उस महिला मार्च के आयोजन में भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाई, जिसमें महिलाओं के लिए समान अधिकारों की मांग की गई तथा यह भारत में महिला आंदोलन के इतिहास में एक महत्वपूर्ण क्षण था।

अक्काम्मा चेरियान महिलाओं की शिक्षा की प्रबल समर्थक थी और लड़कियों के लिए स्कूल और कॉलेज स्थापित करने के लिए काम करती थी। उन्होंने दलितों और आदिवासियों सहित समाज के हाशिए के वर्गों के उत्थान की दिशा में भी काम किया।

समाज में उनके योगदान के सम्मान में, अक्काम्मा चेरियान को 1987 में भारत के सर्वोच्च नागरिक सम्मानों में से एक 'पद्मश्री' से सम्मानित किया गया था।

जस्टिस अन्ना चांडी :

जस्टिस अन्ना चांडी भारत की पहली महिला न्यायाधीश और उच्च न्यायालय की न्यायाधीश बनने वाली एशिया की पहली महिला थीं। उन्हें 1959 में केरल उच्च न्यायालय के न्यायाधीश के रूप में नियुक्त किया गया था और उन्होंने एक दशक से अधिक समय तक वहीं कार्य किया। कानूनी पेशे में महिलाओं के खिलाफ मौजूदा सामाजिक मानदंडों और पूर्वाग्रहों के बावजूद उच्च न्यायालय के न्यायाधीश के रूप में उनकी नियुक्ति अभूतपूर्व थी।

न्यायाधीश के रूप में अपने कार्यकाल के दौरान, चांडी ने लैंगिक न्याय को बढ़ावा देने और महिलाओं के अधिकारों की वकालत करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। वे सामाजिक मुद्दों पर अपने प्रगतिशील विचारों और महिला सशक्तिकरण के लिए जानी जाती थीं।

तिरुवितांकूर के लॉ कॉलेज में दाखिला लेने वाली पहली महिला होने के नाते, अन्ना चांडी को पुरुष छात्रों और प्रोफेसरों के बहुत मजाक और विरोध का सामना करना पड़ा। इस दुश्मनी के बावजूद, उसने अपनी डिग्री को डिस्टिंक्शन के साथ पूरा किया। "श्रीमती" नामक अपनी पत्रिका के माध्यम से अन्ना चांडी ने एक अलग समूह के रूप में महिलाओं की स्थिति के लिए तर्क दिया और आरक्षण के लिए सक्रिय अभियान चलाया।

कानूनी पेशे में चांडी का योगदान और लैंगिक न्याय को बढ़ावा देने में उनका अग्रणी काम भारत और दुनिया भर में महिला वकीलों और कार्यकर्ताओं की पीढ़ियों को प्रेरित करता है। उन्हें व्यापक रूप से कानूनी पेशे में महिलाओं के लिए एक रोल मॉडल के रूप में पहचाना जाता है।

पी टी उषा :

पी. टी. उषा, जिन्हें पय्योली एक्सप्रेस के नाम से भी जाना जाता है, एक पूर्व भारतीय ट्रैक और फील्ड एथलीट है। उन्हें भारत के महानतम खिलाड़ियों में से एक माना जाता है और उन्हें भारतीय ट्रैक एवं फील्ड की रानी उपनाम दिया गया है।

एथलेटिक्स में उषा का करियर 14 साल की उम्र में तब शुरू हुआ जब उन्होंने ओ. एम. नंबियार के तहत प्रशिक्षण शुरू किया। उन्होंने 1979 के भारत के राष्ट्रीय खेलों में अपना पहला पदक, कांस्य पदक जीता और अगले दशक तक भारतीय एथलेटिक्स पर हावी रहीं।

उषा की सबसे बड़ी उपलब्धि जकार्ता में 1985 में एशियाई ट्रैक एंड फील्ड चैंपियनशिप में आई, जहां उन्होंने पांच स्वर्ण पदक जीते और 400 मीटर हर्डिल्स में एक नया एशियाई रिकॉर्ड बनाया। उन्होंने इसी चैंपियनशिप में दो रजत पदक भी जीते।

उषा ने 2000 में एथलेटिक्स से अवकाश ले लिया और युवा प्रतिभाओं को आगे बढ़ाने और खेल के क्षेत्र में भविष्य के चैंपियन तैयार करने के उद्देश्य से केरल में 'उषा स्कूल ऑफ एथलेटिक्स' की स्थापना की। उन्हें भारतीय एथलेटिक्स में योगदान के लिए 1985 में पद्मश्री और 1984 में 'अर्जुन पुरस्कार' से सम्मानित किया गया था।

पी टी उषा भारत में कई युवा खिलाड़ियों के लिए प्रेरणास्रोत बनी हुई है और देश की सबसे प्रिय खेल हस्तियों में से एक है।

केरल की महिला शक्ति के ये कुछ उदाहरण हैं। कई और भी महिलाएं हैं जिन्होंने विभिन्न क्षेत्रों में महत्वपूर्ण योगदान दिए हैं। केरल में महिलाओं ने राज्य के विकास और प्रगति में महत्वपूर्ण योगदान दिया है और राज्य ने लैंगिक समानता और महिला सशक्तिकरण को बढ़ावा देने में अन्य राज्यों के लिए एक उदाहरण स्थापित किया है।

क्योंकि मैं एक महिला हूँ।

मुस्कुराना है मुझे तब भी,
जब घर वालों को खाना खिलाने के लिए
मैं बिना नाश्ता किए ऑफिस जाती हूँ,
क्योंकि मैं एक महिला हूँ।

मुस्कुराना है मुझे तब भी,
जब मेरे बच्चे के विद्यालय में "ऐन्युअल स्पोर्ट्स डे" के कारण
मैं अपने कार्यालय की जरूरी बैठक मिस करती हूँ,
क्योंकि मैं एक महिला हूँ।

मुस्कुराना है मुझे तब भी,
जब बीमार बच्चे की देखभाल के कारण
पूरी रात जगने के बाद भी
मैं सुबह सबसे पहले उठ जाती हूँ,
क्योंकि मैं एक महिला हूँ।

मुस्कुराना है मुझे तब भी,
जब पूरा दिन ऑफिस और घर के काम से थकने के बाद भी
मैं अपने बच्चे को सुलाने के लिए उसे कहानी सुनाती हूँ,
क्योंकि मैं एक महिला हूँ।

मुस्कुराना है मुझे तब भी,
सास-ससुराल का खयाल रखते-रखते मैं जब
अपनी बीमार माँ से चार दिन तक बात नहीं कर पाती हूँ,
क्योंकि मैं एक महिला हूँ।

मुस्कुराना है मुझे तब भी,
जब ससुराल में अपने खाने-पीने की रुचि छोड़कर
मैं परिवार के पसंद का खाना खाती हूँ,
क्योंकि मैं एक महिला हूँ।

मुस्कुराना है मुझे तब भी,
जब ऑफिस में घर और घर पर ऑफिस की वजह से
मैं लोगों के ताने सुनती हूँ,
क्योंकि मैं एक महिला हूँ।

मुस्कुराना है मुझे तब भी,
जब सारे तनाव, चिंता और थकान के बाद
मैं अपने परिवार को मुस्कुराते देखती हूँ,
क्योंकि मैं एक महिला हूँ।

मुस्कुराना है मुझे तब भी,
प्रभु द्वारा दिए गए सब कुछ सहन करने के गुण को
जब मैं अपने अंदर खुशी-खुशी से देखती हूँ ।
क्योंकि मैं एक महिला हूँ।

और हाँ सुनो, मैं प्रभु की इस महिला रूपी कृति का रूप हूँ,
इसका मुझे गर्व है।

पद्मजा मोहंती
वरिष्ठ प्रबंधक
गाज़ियाबाद आंचलिक कार्यालय

फिनेकल की आत्मव्यथा

सुकन्या दत्ता
राजभाषा अधिकारी
नासिक अंचल

इस व्यस्त जीवन शैली में इंसान स्वयं की भावनाओं से परिचित हो, यही बहुत बड़ी उपलब्धि है। अब ऐसी परिस्थितियों में किसी बेजान चीज़ की भावनाओं को समझना, उसकी व्यथा को महसूस करना ज़रा नामुमकिन ही लगता है परन्तु यदि ऐसा अजूबा हुआ भी तो वो इंसान भीषण भावुक ही होगा, इसमें कोई दो राय नहीं।

कहानी शुरू होती है "दैनिक बैंक" नामक बैंक की कलकत्ता शाखा में प्रबंधक के पद पर कार्यरत स्मिता पाल से। स्मिता का सपना आईआईटी पास कर किसी बड़ी एमएनसी कंपनी में काम करने का था परन्तु गणित में यदि कोई निल बटा सन्नाटा हो तो उसे इतने बड़े ख्वाब देखने से परहेज़ करना चाहिए। पर शायद यह बात उसे किसी ने नहीं, बल्कि वक्त ने सिखा दी थी। आईआईटी तो नहीं, परंतु अपने विधायक चाचा के आशीर्वाद से उसे बैंक की नौकरी जरूर मिल गई।

यहां पर पाठक को इससे अवगत कराना आवश्यक है कि उसके सपनों के पूरे न होने का दोष केवल गणित पर लाद नहीं सकते, बल्कि इसमें उसके भावुक मन की भूमिका भी तीव्र है जिसकी पहुंच सजीव से लेकर निर्जीव, सभी चीजों में समान रूप से है।

खैर यह तो कहानी के एक पात्र से परिचय हुआ। अब चलते हैं इसके मुख्य पात्र की ओर......परंतु उनसे भेंट हो, उससे पहले एक चेतावनी देना आवश्यक है, यदि पाठकों में से कोई ऐसा है जिसने अक्सर अपने दिल से सोचना अनावश्यक माना हो अथवा अपनी भावनाओं से कम मुख़ातिब हुआ हो या फिर जिसकी विचारशीलता की गहराई उसकी संवेदनशीलता से अधिक हो, उनके लिए यह कहानी बिल्कुल नहीं है।

बैंकिंग जगत में ग्राहक के अतिरिक्त यदि कोई आवश्यक चीज़ है तो वह आईटी है। सिस्टम एवं सॉफ्टवेयर के इर्द-गिर्द घूमती बैंकिंग की दुनिया तथा इस कहानी का मुख्य पात्र फिनेकल सॉफ्टवेयर है।

एक दिन स्मिता पाल ऐसे ही अपने दैनिक काम में मग्न थी। रोज़ की तरह ग्राहकों की जिज्ञासाओं/समस्याओं को दूर करने के उपरांत उसका सामना कई दिनों से पड़ी हुई फाइलों से हुआ। उसका कुछ कार्य बचा हुआ था जिसे मार्च के भीतर पूरा करना जरूरी था। लगभग सभी सहकर्मी जब उसके रुकने की वजह जानकर एवं उसे जल्दी और ठीक से घर जाने की हिदायत देकर चले गए, तब वह अपना काम और अधिक तेज़ी से करने लगी। उसके अतिरिक्त शाखा में ऋण प्रबंधक महोदय श्री महेश दास जी एवं सुरक्षा गार्ड मौजूद थे। बैंक दो मंज़िले का था। ऊपर ऋण विभाग का वर्चस्व था और नीचे शाखा प्रबंधक सहित अन्य स्टाफ सदस्यों का आधिपत्य था।

ओह! आपकी सूचना के लिए बता दूं कि स्मिता प्रशासन प्रबंधक थी, इसलिए शायद उसकी ज़िम्मेदारी भी अधिक थी। खैर ऐसी ही एक शाम उसे अचानक से रोने की आवाज़ सुनाई पड़ी। कुछ देर तक तो उसने उसे बाहर बच्चों की शैतानी समझकर अनसुना किया, परंतु जब आवाज़ निरंतर आती रही तब वह थोड़ी ठिठक सी गई। उसने दबे हुए होठों से पूछा- "कौन है?"

आवाज़ आई - "मैं फिनेकल।"

स्मिता ने चकित होकर अविश्वसनीय स्वर से पूछा - "क्या?"

फिर से आवाज़ आई - "हाँ, हाँ आपने सही सुना, मैं फिनेकल हूँ।"

अब स्मिता सटपटा गई, परंतु संभलकर पूछा- " क्या बात है? कौन है, मज़ाक मत करो। अनिमेष यदि यह तुम हो तो ये बहुत भद्दा मज़ाक है।" (अनिमेष एवं स्मिता ने बैंकिंग जगत में एक साथ कदम रखे थे। उनकी मित्रता भी अच्छी खासी थी)

सिस्टम से तभी एक बार और आवाज़ आई, परंतु इस बार जरा जोर से - "मैं फिनेकल बोल रहा हूँ। खैर, तुम इंसानों के सामने स्वयं भगवान भी आ जाए तो भी तुम उनकी परीक्षा लोगे, मैं तो एक सॉफ्टवेयर मात्र हूँ।"

"रुको, अभी मैं अपने कपड़े बदलकर दिखाता हूँ। ओह! माफ़ करना, मेरा मतलब अपना मेनू चेंज करता हूँ। शायद तब जाकर तुम्हें विश्वास हो।"

तुरंत सीआरएम से मेनू अपने आप एसएसओ एडमिन में

बदल गया। अब स्मिता के पैरों से जैसे ज़मीन खिसक गई हो। थोड़ी स्थिर होकर, संभलकर एवं 'ओ माँ-माँ गो' (हे माँ), 'ओ भोगोबान' (हे भगवान), 'दुग्गा-दुग्गा' (दुर्गा -दुर्गा) जैसे मंत्र बड़बड़ाने लगी।

तभी पुनः आवाज़ आई।

"अरे, डरो मत। मैं तुम्हारा कोई नुकसान करने नहीं आया हूँ। बहुत दिनों से मेरे अंदर एक कशमकश सी चल रही थी। कोई साथी होता तो शायद उससे मन की बात साझा कर पाता, परंतु क्या करूं, दैनिक बैंकिंग में काम आने वाले अधिकतर सॉफ्टवेयर इंटरनेट पर भी काम करते हैं। इसलिए वे मेरा दुःख क्या समझेंगे। ले देकर दो-तीन ही ऐसे भाई-बहन होंगे जो मेरी तरह इंटरनेट गंवार होंगे। या फिर यूं कहूं कि बैंक के केंद्र बिंदु या आखों के तारे होंगे। सबको मुझसे शायद कुछ अधिक काम पड़ता है जिसके कारण दूसरों के मुकाबले मैं जल्दी थक जाता हूँ। दूसरों की ऊर्जा की तुलना में मेरी ऊर्जा थोड़ी जल्दी फुस्स हो जाती है जिसके कारण वे सब तो प्रयोगकर्ताओं को तुरंत जवाब दे देते हैं, परंतु मैं पीछे रह जाता हूँ। अकेला पड़ जाता हूँ।"

तभी ऊपर से महेश सर के पैरों की आहट सुनाई दी। महेश सर ने उतरते हुए पूछा - "क्या हुआ स्मिता, माना कि कल इस वित्तीय वर्ष का अंतिम दिन है परंतु तुम्हें घर नहीं जाना है क्या? पूरे महीने का काम एक ही दिन में कैसे खत्म करोगी? - उन्होंने व्यंग्यात्मक हंसी के साथ पूछा।

स्मिता खुद को सहज करती हुई बोली - "अरे! नहीं, बस अब खत्म होने को आया है। अगर पारुल मैम ने पहले इन फाइलों का जिक्र किया होता तो इतनी देर नहीं लगती। चलिए कोई बात नहीं ...." कहकर उसने सर की जिज्ञासा तथा व्यंग्यात्मक क्षुधा को शांत किया। उनके जाते ही स्मिता ने आवाज़ लगाई - "मिस्टर फिनेकल जी, कहाँ है आप?.....कुछ कह रहे थे..... माफ़ करना इस विघ्न के लिए....मैं यहीं हूँ.....सुनना चाहती हूँ आपकी व्यथा....कृपया बोलिए....प्लीज़।"

स्मिता को लगा ही था कि बात अब अधूरी ही रह जाएगी, तभी फिर से आवाज़ आई- "इसकी मुझे आदत है मिस पाल, लोग अक्सर काम करते-करते जब ऊब जाते हैं तब मुझे सीआरक्यू ब्रांड का वस्त्र पहनाकर चले जाते हैं। मैं उसी कपड़े में काफी समय तक उनका इंतज़ार करता हूँ। जब प्रतीक्षा करते करते मैं थक जाता हूँ तो स्टाफ को यह नागवार गुजरता है। थकने के कारण मैं जब थोड़ा ढीला पड़ जाता हूँ तो उनका गुस्सा कभी कभी इतना तीव्र रूप ले लेता है कि गालियों की बौछार तक हो जाती है।"

एक सांस भरकर आगे बढ़ते हुए उसने कहा - "ऐसा भी नहीं कि पूरा दिन ही थका रहता हूँ। ये आईटी वाले कुछ जोड़-तोड़ लगाकर मुझमें पुनः उर्जा भर देते हैं। बस हमेशा तुम मनुष्यों की स्वार्थपरता का एहसास है। जब तक आपसे काम है तब तक नाम है, वरना आप कौन है?"

वह बोलता रहा - "आप इंसान हो तो थक सकते हो, वह चलता है परंतु इतने सारे वस्त्र (मेनू) बदलते-बदलते और आपके एक अंगूठे पर नाचते-नाचते यदि मैं थक जाऊँ तो यह अस्वीकार्य है। ऐसे स्थिति में यह अकेलापन, यह दुर्गम जीवन अधिक खटकता है। मेरे भाई-बहन यानी एचआरएमएस, एमएमएस, कैप्स सभी के लिए तो विकल्प भी है परंतु मैं कहाँ जाऊं? शायद ख़ास होना भी अपने आप में अभिशाप है। इसलिए ईश्वर की सबसे सुन्दर रचना 'नारी' को भी कई चुनौतियों, मुश्किलों से गुज़रना पड़ता है। शायद प्रकृति में ख़ास होना भी अभिशाप है।"

"खैर मुझे बस अपनी आप-बीती किसी इंसान से साझा करनी थी, इसलिए आज मैं बोल पड़ा।"

स्मिता - "परंतु मैं ही क्यों?"

यह प्रश्न शायद इस कहानी को पढ़ते हुए प्रत्येक पाठक के मन में आया होगा। इसका उत्तर आप दुनिया के फैलाए मिथकों में ना ढूंढे, जिसके अनुसार स्त्रियों में भावुकता की अधिकता के कारण स्मिता को चुना गया। नहीं, यह तो बस एक गुण है जो किसी में अधिक तो किसी में शून्य के बराबर होता है। इसका उत्तर कहानी के मुख्य पात्र से ही सुनते हैं।

फिनेकल- "क्योंकि आज मन अधिक बोझिल हो गया था.... यह उम्मीद भी है कि शायद कल से कोई तो होगा जो मेरी व्यथा को समझेगा। आगामी वित्तीय वर्ष में शायद मेरे ऊपर यह . जुल्म थोड़ा कम होगा। अपेक्षाओं की पूर्ति दो तरफ़ा होगी।"

बातें बंद हो गई, जैसे भारी वर्षा के बाद एक निस्तब्धता सी छा जाती है परंतु प्रकृति प्रेमियों का मन और बरसात को तरसता है वैसे ही स्मिता के लिए उसकी बातें भी वर्षा की बूंदों के जैसे ही थीं।"

उसने उसी चाह से पुनः आवाज़ लगाई- "फिनेकल जी"

उसे उत्तर में किसी दरवाज़े के खुलने की आवाज़ सुनाई पड़ी तथा कोई भारी कर्कश आवाज़ में किसी से कह रहा हो उठो, मैडम उठो।

स्मिता की आखें खुलीं और फाइलों के पहाड़ में से जब उसने अपना सिर उठाया तो महेश जी उसे टकटकी लगाए देख रहे थे और होठों में वही व्यंग्यात्मक हंसी भरकर कह रहे थे - "उठो, मैडम सवेरा हो गया।"

भारत में महिला सुरक्षा

प्रियंका मीना
विधि अधिकारी
जोधपुर आंचलिक कार्यालय

भारत में विभिन्न युगों के दौरान महिलाओं की स्थिति में परिवर्तन होता आया है। वैदिक काल में महिलाओं को देवी के समान दर्जा प्राप्त था एवं देवी के समान उनकी पूजा की जाती थी। उन्हें शिक्षा प्राप्त करने का अधिकार भी था। हमें वेदो-पुराणों में इसके अनेक उदाहरण देखने को मिल जाते हैं।

"यत्र नार्यस्तु पूज्यंते, रमन्ते तत्र देवता।"

अर्थात जहां नारी की पूजा की जाती है, वहाँ देवता निवास करते हैं। वैदिक काल में महिलाओं की सुरक्षा भी धर्म-कार्य माना जाता था। परन्तु समय के साथ इस स्थिति में परिवर्तन आने लगा और मध्यकालीन भारत में महिलाओं की स्थिति व सुरक्षा पर प्रश्न उठने लगे। महिलाओं की स्थिति दीन हो गयी। बाल विवाह, सती प्रथा, जौहर, पर्दा प्रथा इत्यादि कई कुरीतियाँ समाज में घर कर गईं। महिलाओं को केवल वस्तु समझा जाने लगा।

समय के साथ कई समाज सुधारकों ने महिलाओं के उत्थान व उनकी मुक्ति के लिए पुरजोर प्रयास किए। इनमें राजा राममोहन राय, ज्योतिबा फुले, ईश्वरचंद विद्यासागर, भीमराव रामजी अंबेडकर इत्यादि के नाम प्रमुख हैं। इन्होंने महिला सशक्तिकरण पर ज़ोर दिया व समाज में महिलाओं की बेहतर स्थिति के लिए अनेक कार्य किए। स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद भारत के संविधान में भी महिलाओं की स्थिति बेहतर करने के लिए अनेक प्रावधान किए गए। भारत का संविधान सभी भारतीय महिलाओं को समान अधिकार {अनुच्छेद 14} राज्य द्वारा कोई भेदभाव नहीं करने {अनुच्छेद 15 (1)} अवसर की समता {अनुच्छेद 16} समान कार्य के लिए समान वेतन {अनुच्छेद 39 (घ)} की गारंटी देता है। इसके अलावा यह महिलाओं और बच्चों के पक्ष में राज्य द्वारा विशेष प्रावधान बनाए जाने की अनुमति भी देता है {अनुच्छेद 15(3)} महिलाओं की गरिमा के लिए अपमानजनक प्रथाओं का परित्याग करने {अनुच्छेद 51(ए)(ई)} और साथ ही काम की उचित एवं मानवीय परिस्थितियाँ सुरक्षित करने और प्रसूति सहायता के लिए राज्य द्वारा प्रावधानों को तैयार करने की अनुमति देता है। (अनुच्छेद 42)।

वर्तमान में भी महिलाओं के प्रति अपराधों की संख्या में वृद्धि देखने में आई है। महिलाओं की सुरक्षा हेतु समय समय पर कई कानून बनाए गए जिनसे महिलाओं के विरुद्ध अपराधों को कम करने के प्रयास किए गए। भारतीय दण्ड संहिता, 1860 की विभिन्न धाराओं जैसे धारा 313 "स्त्री की सहमति के बिना गर्भपात कारित करने", धारा 354 "स्त्री की लज्जा भंग करने के आशय से उस पर हमला या आपराधिक बल का प्रयोग करने", धारा 354क, 354ख, 354ग, 354घ क्रमशः "लैंगिक उत्पीड़न के लिए दण्ड", "विवस्त्र करने के आशय से हमला करने", "दृश्यरतिकता", "पीछा करने के लिए दण्ड", धारा 366क "अप्राप्तवय लड़की के उपापन के लिए दण्ड", धारा 376, 376क, 376ख, 376ग, 376घ, 376DA, 376DB यौन अपराधों के लिए दंड, धारा 498क "पति या पति के नातेदारों द्वारा स्त्री के प्रति क्रूरता करने" इत्यादि के लिए दंड का प्रावधान किया गया है।

उसी प्रकार घरेलू हिंसा से महिला का संरक्षण अधिनियम, 2005 ऐसी महिलाओं के, जो कुटुंब/परिवार के भीतर होने वाली किसी भी किस्म की हिंसा से पीड़ित हैं, उनके संविधान के अधीन प्रत्याभूत अधिकारों को अधिक प्रभावी संरक्षण प्रदान करता है। इसका उद्देश्य घरेलू हिंसा से महिलाओं को सुरक्षित रखना है और पीड़ित महिलाओं को कानूनी सहायता उपलब्ध कराना है। इस अधिनियम में घरेलू हिंसा के अंतर्गत न केवल शारीरिक हिंसा को ही घरेलू हिंसा माना गया है, वरन शारीरिक दुरुपयोग, लैंगिक दुरुपयोग, मौखिक और भावनात्मक दुरुपयोग और आर्थिक दुरुपयोग कारित करने, दहेज या अन्य संपत्ति या मूल्यवान प्रतिभूति की प्राप्ति के लिए स्त्री को या उस से संबंधित किसी भी व्यक्ति को उत्पीड़ित करने या अपहानि कारित करने को भी घरेलू हिंसा की श्रेणी में रखा गया है। घरेलू हिंसा से पीड़ित महिला की सहायता हेतु आश्रय गृहों, चिकित्सा सुविधाओं, पुलिस सहायता, सेवा प्रदाताओं इत्यादि के संबंध में प्रावधान किए गए हैं तथा विभिन्न प्रकार के अनुतोष/आदेश जिनमें साझी गृहस्थी में निवास का अधिकार, संरक्षण आदेश, निवास आदेश, धनीय अनुतोष, अभिरक्षा आदेश, प्रतिकर आदेश प्रदान करने का भी प्रावधान किया गया है।

महिलाओं के सशक्तिकरण की राष्ट्रीय नीति 2001 में पारित की गयी थी। भारत सरकार ने वर्ष 2001 को महिलाओं के सशक्तिकरण (स्वशक्ति) वर्ष के रूप में घोषित किया था। हिंदू उत्तराधिकार अधिनियम, 1956 को सितंबर 2005 में संशोधित किया गया और वर्ष 2005 से संपत्ति विभाजन के मामले में महिलाओं को भी सहदायक के रूप में मान्यता दी गई। अब पुत्री को भी जन्म से ही संपत्ति में पुत्र के समान सहदायक माना गया।

कृष्ण - एक खोज स्वयं की

प्रियंका शर्मा
प्रबंधक
भांकरोटा शाखा
जयपुर अंचल

अभी कुछ ही दिन पहले की बात है, घर से ऑफिस आते वक्त अनायास ही मेरे फोन की प्ले लिस्ट से एक गीत मेरी कार के ऑडियो प्लेयर में बजा। गीत था "ऐसी लागी लगन, मीरा हो गई मगन, वो तो गली-गली हरि गुण गाने लगी। महलों में पली, बन के जोगन चली, मीरा रानी दीवानी कहाने लगी।।" इस गीत को सुनने से पहले न जाने मेरे मन पर कितना बोझ सा था। ऐसा लगता था मानो बहुत सारे सिक्कों से भरा हुआ एक बैग मेरे सिर पर रख दिया गया हो। लेकिन जैसे-जैसे इस गीत के अल्फ़ाज़ मेरे कानों में पड़ते गए, वैसे-वैसे वो बोझ धीरे-धीरे कम होता गया। 45 मिनट का वो सफर मेरी ज़िंदगी की सबसे खूबसूरत और सुखद यात्रा थी जिसने मेरे मन के तार किसी अनकही, अनदेखी, अनछुई शक्ति से मिला दिए। ऐसा लगा, मानो खुले आसमान के बीच किसी ने मुझे स्काइ डाइविंग के लिए धक्का दे दिया हो और एक भयंकर डर से निजात पाकर मैं एक बेफिक्र पंछी की तरह उड़ रही हूँ।

यकीन मानिए इतना सुकून किसी भी मंज़िल को पाकर नहीं मिल सकता, जितना श्रीकृष्ण की भक्ति में लीन होकर मिलता है। हमारा जीवन ईश्वर की देन है, ये लोगों को भलीभाँति पता है। ईश्वर केवल निराकार नहीं है। उसके निराकार और साकार दोनों ही रूप हैं। चूँकि ईश्वर असीम है, तो उनके नाम भी अनेक हैं - अल्लाह, बुद्ध, यहोवा, राम। ये सभी एक ही हैं और जो कुछ भी इस सृष्टि में विद्यमान है, उनके ही स्रोत हैं।

अगर हम ज़िंदगी को एक किताब पर उतारते हैं तो उस ज़िंदगी में हम बहुत से किरदारों को पाते हैं, जैसे कि बाल रूप, शिष्य रूप, सखा रूप, प्रेमी रूप, धर्मरूप, कर्मयोगी रूप, योद्धा रूप, राजनीतिज्ञ रूप। इन सभी रूपों को श्रीकृष्ण ने अपने अवतार में बखूबी निभाया और आज भी इन सभी रूपों में वही अपने आदर्श हैं।

बाल रूप - आज भी यदि कोई माँ प्रसव से पहले अपने बच्चे को किसी रूप में आकार देती है, तो वो रूप केवल श्री कृष्ण, नंदलाल, कन्हैया का ही होता है। उन्होंने अपने बाल रूप को जिस नादानी के साथ जिया, वो आज भी लोगों के बीच मिसाल है। उनका माखन चोर होना, बांसुरी बजाना, गोपियों को परेशान करना, ग्वाले के रूप मे गायों को चराना, शायद ही किसी ने अपना बचपन इस तरह से सोचा हो। वैसे ये सत्य है कि जो हमारी सोच से परे है - वही श्रीकृष्ण है।

शिष्य रूप - शिष्य रूप की सबसे बड़ी परीक्षा गुरु दक्षिणा ही होती है, उस दक्षिणा में उन्होंने अपने गुरु सांदिपनि के मृत पुत्र को यमराज से मुक्ति दिलाकर उनके प्राण वापस लाकर दिये थे। इससे बड़ी गुरु दक्षिणा शायद ही कोई होगी।

सखा रूप - यूँ तो कृष्ण ने जीवनपर्यंत बहुत से लोगों के साथ अपनी मित्रता निभाई जिसमें कृष्ण और सुदामा की दोस्ती तो सभी के मुख पर मिसाल के रूप में रहती ही है, पर उनकी सखी द्रौपदी भी थी। एक कथा के अनुसार जब श्रीकृष्ण द्वारा सुदर्शन चक्र से शिशुपाल का वध किया गया, उस समय कृष्ण की उंगली भी कट गई थी। उंगली कटने पर श्रीकृष्ण का रक्त बहने लगा, तब द्रौपदी ने अपनी साड़ी फाड़कर कृष्ण की उंगली पर बांधी थी, उस कर्म के बदले कृष्ण ने द्रौपदी के चीरहरण के समय इस साड़ी को इस पुण्य के बदले इतना बड़ा करके लौटाया कि उनकी लाज बच गई। कहते हैं माता-पिता के बाद सबसे बड़ा

रिश्ता "सखा" का ही होता है, जिसको उन्होंने साकार करके बताया। जब द्रौपदी अपने पतियों और रिश्तेदारों के सामने भरी सभा में अपमानित हो रही थी, तब उनके सखा श्रीकृष्ण ही उनके रक्षक बनकर आए।

प्रेमी रूप - राधा और श्रीकृष्ण का प्रेम अमर है। उन दोनों ने एक दूसरे से निःस्वार्थ प्रेम किया था, तभी तो श्रीकृष्ण की अर्धांगिनी न होने के बावजूद भी उनका नाम श्रीकृष्ण के आगे लगाया जाता है - "राधेकृष्ण"। कोई पुरुष शादी के बाद स्त्री को अपना उपनाम भी नहीं रखने देता है, वहीं श्रीकृष्ण ने इस पितृसत्तात्मक सोच को अलग रखकर परमेश्वर होते हुए भी राधा को अपने से आगे रखा। राधा उनकी बांसुरी की दीवानी थी इसलिए जब श्री राधे अपने जीवन के अंतिम पड़ाव पर थीं, तब श्रीकृष्ण ने उनकी अंतिम इच्छा पूछी तो काफी मान-मनुहार के बाद राधा के मुंह से शब्द निकले - "कृष्ण मुझे तुम्हें बांसुरी बजाते हुए देखना है।" तब श्रीकृष्ण मुरली बजाते रहे और श्री राधे ने उन्हें निहारते-निहारते अपने प्राण त्याग दिए। ऐसा था राधा का कृष्ण के प्रति प्यार जिसमें अंत समय में भी वे सिर्फ उनको निहारते हुए उन्हीं में समा जाना चाहती थी।

राजनीतिक रूप - भगवान श्रीकृष्ण ने अपने सम्पूर्ण जीवन में कूटनीति यानी साम, दाम, दंड, भेद अपनाते हुए हर परिस्थिति को अपने अनुसार ढालकर भविष्य का निर्माण किया। उन्होंने दुर्योधन के शरीर को वज्र के समान होने से रोक दिया। सबसे शक्तिशाली बर्बरीक का शीश मांग लिया। कर्ण से उसके कुंडल और कवच दान में दिलवा दिए। दूसरी तरफ घटोत्कच को सही समय पर युद्ध में उतारा। ऐसी बहुत सी बातें हैं जिनसे पता चलता है कि उन्होंने अपनी चतुराई और कूटनीति के माध्यम से पांडवों को जीत दिलाई।

ये सब बातें हम सभी जानते हैं क्योंकि कहीं न कहीं हर कोई कृष्ण तक पहुंचना चाहता है। हम ये भी जानते हैं कि उनके जितना कोई विशाल नहीं है। समुद्र और आसमान की कोई सीमा नहीं है, पर उनका रंग नीला ही क्यों है क्योंकि यह रंग कृष्ण का है जो खुद असीम है और जो कण-कण में विद्यमान है। मीरा बाई ने महलों की रानी होते हुए भी सब त्याग दिया और श्रीकृष्ण की दीवानी हो गई। इतनी विपदाएँ आईं, पर उनका कुछ ना बिगाड़ पाई क्योंकि खुद कृष्ण ने उनको थाम लिया था। अंत समय में ऐसे निस्वार्थ प्रेम की आत्मा को उन्होंने मरने नहीं दिया और अपने अंदर ही समाहित कर लिया।

अब आपको क्या लगता है कि इस शक्ति के अलावा दुनिया में कोई ऐसी शक्ति होगी जिसे हम अपना आदर्श बना पाएँ, जिसके सामने हम अपने सारे सुख-दुख कह पाएँ। नहीं, मुझे नहीं लगता कि ऐसी कोई शक्ति है और अगर है तो वो हम स्वयं हैं क्योंकि हम सभी के अंदर कृष्ण है। अगर हम सुकून पाना चाहते हैं, अपनी मंज़िल तक पहुँचना चाहते हैं तो किसी आदर्श को लेकर चलने की जरूरत नहीं। आपके अंदर जो कृष्ण है बस एक बार दिल से उसे ढूंढ लीजिए, अगर वे आपको मिल जाते हैं तो फिर आपका आदर्श आपके अंदर ही है जो हर क्षेत्र में सर्वश्रेष्ठ है। पर कृष्ण को पाना इतना आसान नहीं, उसके लिए मेहनत, निःस्वार्थ भावना, प्रेम, सामाजिक सदभाव, एकाग्रता की आवश्यकता है। अगर आप अपने अंदर कृष्ण को पा लेंगे तो फिर किसी और बाहरी खोज की आवश्यकता नहीं होगी।

नारी : एक अतुल्य शक्ति

हर पल - हर क्षण दिखती है वो सबसे अलग,
ममता की मूरत से लेकर चंडी का वो प्रचंड अक्स
रुकती नहीं, थकती नहीं, जब वो कुछ ठान ले।

असंभव को भी संभव कर दे, जीवन को आयाम दे!
शत् शत् नमन है तुझे, तू ही सबकी प्रेरणा,
तू ही जननी, तू ही पालक, तू ही मेरी वंदना ।

आस्था
पुत्री गुरु प्रसाद गोंड
आंचलिक प्रबंधक
बर्धमान अंचल

आज के परिवेश में स्वास्थ्य का महत्व

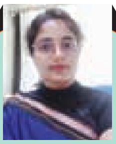

ओशीन शेख
राजभाषा अधिकारी
तेलंगाना अंचल

स्वास्थ्य शारीरिक, मानसिक और सामाजिक कल्याण की स्थिति है। स्वास्थ्य का महत्व सबसे पहले है और बाकी सब कुछ इसके बाद में आता है। अच्छा स्वास्थ्य बनाए रखना कई कारकों पर निर्भर करता है जैसे हम कैसी हवा में साँस लेते हैं, कैसा और कैसे पानी पीते हैं, कैसे और किस तरह का भोजन करते हैं, किस तरह के लोगों से हम मिलते हैं और हम शारीरिक रूप से कितने सक्रिय रहते हैं। आज के समय में व्यक्ति को न केवल अपने शारीरिक स्वास्थ्य की ओर ध्यान देने की जरूरत है, बल्कि उससे कहीं ज़्यादा अपने मानसिक स्वास्थ्य की ओर ध्यान देने की भी जरूरत है। जीवन में आने वाली हर छोटी-बड़ी समस्या हमारे दृष्टिकोण पर निर्भर करती है कि हम किस तरह उसे देख रहे हैं, और उसी के परिणामस्वरूप हमें जिंदगी में उसके नतीजे मिलते हैं। मानसिक रूप से स्वस्थ व्यक्ति के जीवन में तारतम्यता एवं जीवन के प्रति सकारात्मक दृष्टिकोण होता है।

हमारी आज की पीढ़ी मोबाइल, बर्गर, पिज़्ज़ा, कंप्यूटर और देर रात तक पार्टियां करने में विश्वास करती है। सही मायने में, ये सब आदतें स्वास्थ्य के लिए हानिकारक हैं। आजकल हर किसी को व्यक्तिगत कारकों और पेशेवर प्रतिबद्धताओं ने जकड़ रखा है और इन सभी आदतों की वजह से इंसान अपना स्वास्थ्य खो रहा है। आज के समय में लोग अपने दिन भर के कामों में इतने व्यस्त हो गए हैं कि वे अपने स्वस्थ जीवन को जीने के बारे में भूल गए हैं।

स्वस्थ जीवन शैली का अर्थ स्वस्थ आहार, नियमित दिनचर्या है। नियमित तौर पर व्यायाम अर्थात योग, आसन, ध्यान आदि को प्राथमिकता दे सकते हैं, साथ ही अच्छी आदतों का पालन करना और भरपूर नींद लेना एक स्वस्थ जीवन शैली के अंग हैं। निरोगी जीवन जीने और विभिन्न प्रकार की बीमारियां दूर रखने के लिए स्वस्थ जीवन शैली के नियमों का पालन करना जरूरी है।

"स्वास्थ्य ही धन है।" आप अधिक पैसे कमा सकते हैं, समाज में अपनी प्रतिष्ठा बढ़ा सकते हैं और अपने परिजनों के साथ संपन्न जीवनशैली जी सकते हैं, लेकिन ये सब केवल बाहरी चीजे हैं, इससे आप स्वास्थ्य नहीं पा सकते, जीवनकाल नहीं बढ़ा सकते। अपने जीवन का प्रभार लें और स्वस्थ आदतों पर स्विच करें क्योंकि अभी भी समय है।

मैं स्त्री हूँ

मैं स्त्री हूँ
मेरे प्रेम में,
समर्पण भी है
त्याग भी
मीरा सी भक्ति भी है
सीता सा स्वाभिमान भी
पर क्या, तुम में है
राम और कृष्ण की तरह
कर्तव्य निष्ठा का भाव ही।
मैं स्त्री हूँ

मैं नीर सी निर्मल भी हूँ
चंचल बयार भी
अग्नि सी ज्वलंत भी हूँ
वृक्ष की ठंडी छांव भी
पर क्या, तुम में है
हर परिस्थिति में,
मेरे लिए, मेरे साथ,
पर्वत की तरह
तटस्थ खड़े रहने का भाव ही।।
मैं स्त्री हूँ......

अमिता भटेवरा
अधिकारी
सिमरोल शाखा
इंदौर अंचल

नारी

कौन कहता है कि
नारी कमजोर होती है ।
आज भी उसके हाथ में
अपना सारा घर चलाने की डोर होती है ।

वो तो दफ्तर भी जाती है,
और अपने घर परिवार को भी संभालती है।
एक बार नारी की जिंदगी जी कर तो देखें,
अपने मर्द होने का घमंड उतर जाएगा ।
अब हौसला बन तू उस नारी का,
जिसने जुल्म सह कर भी तेरा साथ दिया।

तेरी जिम्मेदारियों का बोझ भी,
खुशी से तेरे संग बाँट लिया ।
चाहती तो वो भी कह देती, मुझसे नहीं होता।
उसके ऐसे कहने पर,
फिर तू ही अपने बोझ के तले रोता।

गगनदीप कौर
लिपिक
कांड्रा शाखा
धनबाद अंचल

दो नैनों में बंद इंसान के सपने कई हज़ार

न जीवन के बंधन देखे, न वक़्त का कोई हिसाब
दो नैनों में बंद इंसान के सपने कई हज़ार।
भरता जाए मन का पंछी रोज़ एक नयी उड़ान
मंज़िल इसकी सारा आकाश, बादलों के उस पार।।

सोचते थे कि दो वक़्त की रोटी में अपना गुज़ारा होगा
अब चाँदी की थाली से कहते -इससे क्या ही हमारा होगा।
घर और नौकरी में थे जो समझते कि संतोष होगा
भागते फिरते हैं नित-नित कि घर अब कैसे बंगला होगा।।
कितनी बढ़ पाएगी चादर, इसने पांव तो लिए पसार
दो नैनों में बंद इंसान के सपने कई हज़ार।।

क्या नहीं इसके पास जो मीठी नींद ये न ले सके
फिर भी चिंताओं की उधेड़-बुन में रातों को जगे।
मायने नहीं उसके जो पाया, थोड़ा और इसे मिल जाए
तरक्की की राहों में चाहे रिश्ते सब उलझ जाएँ।।

घरौंदा टूटे तो क्या, इसे तो पाना सब संसार
दो नैनों में बंद इंसान के सपने कई हज़ार।।

जीवन तो एक है, सब हासिल करने का भी जोश है
पर जो अपना है उसे गंवा रहे, इसका न कुछ होश है ।
रुकते नहीं लेकिन आज कुछ धीरे तो हम चलते हैं
रफ्तार में फिसल न जाएँ, अब थोड़ा तो संभलते हैं ।।

सब बैस्ट के पीछे कहीं खो न जाए सादगी की दौलत
गैजेट्स नहीं, संस्कारों की कमाई ही है सच्ची शोहरत।
चलो आज लगाम में लाएँ अपने मन की ये सरकार,
दो नैनों में संतोष बसे तो मिल जाए खुशियों का संसार।।

स्वाति
प्रबंधक
आंचलिक कार्यालय
नई दिल्ली अंचल

भारत सरकार, गृह मंत्रालय, राजभाषा विभाग से अंचलों को प्राप्त क्षेत्रीय पुरस्कार

भारत सरकार, गृह मंत्रालय, राजभाषा विभाग की ओर से दिनांक 03.03.2023 को रायपुर में आयोजित संयुक्त क्षेत्रीय राजभाषा सम्मेलन में वर्ष 2020-21 एवं 2021-22 दोनों वर्षों के लिए नागपुर आंचलिक कार्यालय को क्षेत्रीय राजभाषा पुरस्कार के अंतर्गत प्रथम पुरस्कार प्राप्त हुआ। माननीय केंद्रीय गृह राज्य मंत्री श्री अजय कुमार मिश्रा के कर-कमलों से उप आंचलिक प्रबंधक श्री सुधाकर देशटटीवार ने राजभाषा शील्ड एवं मुख्य प्रबंधक (राजभाषा) श्री राजीव कुमार ने प्रमाण पत्र प्राप्त किया।

भारत सरकार, गृह मंत्रालय, राजभाषा विभाग ने वर्ष 2021-22 के दौरान सर्वश्रेष्ठ कार्यनिष्पादन हेतु 'ग' क्षेत्र के अंतर्गत गोवा आंचलिक कार्यालय को प्रथम पुरस्कार प्रदान किया। दिनांक 03.03.2023 को रायपुर में आयोजित पुरस्कार वितरण समारोह में माननीय केन्द्रीय गृह राज्य मंत्री श्री अजय कुमार मिश्रा ने आंचलिक प्रबंधक श्री पी.टी.एस.एस.एन. शर्मा को शील्ड प्रदान कर तथा प्रबंधक (राजभाषा) श्री विजय कुमार को प्रशस्ति पत्र प्रदान कर सम्मानित किया। इस अवसर पर राजभाषा विभाग की सचिव सुश्री अंशुली आर्या तथा संयुक्त सचिव सुश्री मीनाक्षी जौली उपस्थित रहीं।

भारत सरकार, गृह मंत्रालय, राजभाषा विभाग द्वारा दिनांक 27.01.2023 को तिरुअनंतपुरम में आयोजित क्षेत्रीय राजभाषा सम्मेलन (दक्षिण-पश्चिम) में 'ग' क्षेत्र के अंतर्गत सर्वश्रेष्ठ कार्यनिष्पादन हेतु एरणाकुलम आंचलिक कार्यालय को वर्ष 2020-21 और 2021-22 के दौरान क्रमशः तृतीय और द्वितीय पुरस्कार प्रदान किया गया। पुरस्कार वितरण समारोह में आंचलिक प्रबंधक श्री श्रीनाथ एन ने केरल के माननीय राज्यपाल श्री आरिफ़ मोहम्मद खान के कर-कमलों से पुरस्कार स्वरूप शील्ड प्राप्त की तथा माननीय केन्द्रीय गृह राज्य मंत्री श्री अजय कुमार मिश्रा द्वारा प्रबंधक (राजभाषा) श्रीमती षीबा एस आर को प्रमाणपत्र प्रदान कर सम्मानित किया गया।

भारत सरकार, गृह मंत्रालय, राजभाषा विभाग ने वर्ष 2021-22 के दौरान सर्वश्रेष्ठ कार्यनिष्पादन हेतु 'क' क्षेत्र के अंतर्गत इंदौर आंचलिक कार्यालय को द्वितीय पुरस्कार प्रदान किया। दिनांक 03.03.2023 को रायपुर में आयोजित क्षेत्रीय राजभाषा सम्मेलन के दौरान पुरस्कार वितरण समारोह में माननीय केन्द्रीय गृह राज्य मंत्री श्री अजय कुमार मिश्रा ने आंचलिक प्रबंधक श्री भूपेश करौलिया को शील्ड प्रदान कर तथा मुख्य प्रबंधक (राजभाषा) श्री अमरीश कुमार को प्रशस्ति पत्र प्रदान कर सम्मानित किया।

बैंक के संयोजन में कार्यरत नराकासों को प्राप्त क्षेत्रीय पुरस्कार

भारत सरकार, गृह मंत्रालय, राजभाषा विभाग की ओर से दिनांक 03.03.2023 को रायपुर में आयोजित संयुक्त क्षेत्रीय राजभाषा सम्मेलन में वर्ष 2020-21 एवं 2021-22 दोनों वर्षों के लिए नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति (बैंक) नागपुर को क्षेत्रीय राजभाषा पुरस्कार के अंतर्गत क्रमशः प्रथम एवं तृतीय पुरस्कार प्राप्त हुए। माननीय केंद्रीय गृह राज्य मंत्री श्री अजय कुमार मिश्रा के कर-कमलों द्वारा नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति (बैंक) नागपुर को राजभाषा कार्यान्वयन में क्षेत्र में उत्कृष्ट योगदान हेतु यह पुरस्कार प्रदान किया गया। इस अवसर पर उप आंचलिक प्रबंधक श्री सुधाकर देशटटीवार ने राजभाषा शील्ड एवं मुख्य प्रबंधक (राजभाषा) श्री राजीव कुमार ने प्रमाण पत्र प्राप्त किया।

भारत सरकार, गृह मंत्रालय, राजभाषा विभाग द्वारा दिनांक 03.03.2023 को रायपुर में आयोजित संयुक्त क्षेत्रीय राजभाषा सम्मेलन में वर्ष 2020-21 के लिए रत्नागिरी नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति को तृतीय पुरस्कार से नवाजा गया। माननीय केंद्रीय गृह राज्य मंत्री श्री अजय कुमार मिश्रा के कर-कमलों से प्रमाण पत्र ग्रहण करते हुए समिति के सदस्य सचिव श्री रमेश गायकवाड़।

अंचलों को प्राप्त नराकास पुरस्कार

एरणाकुलम अंचल (प्रथम पुरस्कार)

भुवनेश्वर अंचल (प्रथम पुरस्कार)

गोवा अंचल (विशेष पुरस्कार)

विश्व हिन्दी दिवस 2023 का आयोजन

अमृतसर अंचल

इंदौर अंचल

एनबीजी (उत्तरप्रदेश) एवं लखनऊ अंचल

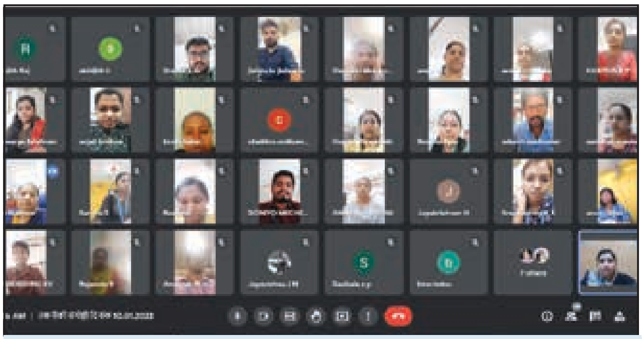
एरणाकुलम अंचल

कानपुर अंचल

केंदुझर अंचल

कोलकाता अंचल

कोल्हापुर अंचल

गया अंचल

गांधीनगर अंचल

गाजियाबाद अंचल

गोवा अंचल

चंडीगढ़ अंचल

जबलपुर अंचल

जमशेदपुर अंचल

जोधपुर अंचल

तेलंगाना अंचल

दिल्ली- एनसीआर अंचल

धनबाद अंचल

नई दिल्ली अंचल

नवी मुंबई अंचल

नागपुर अंचल

नासिक अंचल

पटना अंचल

बर्धमान अंचल

बारासात अंचल

बारिपदा अंचल

बोकारो अंचल

भुवनेश्वर अंचल

मदुरै अंचल

मुंबई (उत्तर) अंचल

रत्नागिरी अंचल

राँची अंचल

राजकोट अंचल

रायगड अंचल

रायपुर अंचल

लुधियाना अंचल

वडोदरा अंचल

वाराणसी अंचल

विजयवाड़ा अंचल

विदर्भ अंचल

संबलपुर अंचल

हजारीबाग अंचल

हरदोई अंचल

हावड़ा अंचल

हुब्बली धारवाड़ अंचल

गुवाहाटी अंचल

पुणे अंचल

अंतरराष्ट्रीय महिला दिवस का आयोजन

वाद-विवाद प्रतियोगिता के प्रतिभागी

पारंपरिक नृत्य प्रतियोगिता के प्रतिभागी

योग वेलनेस कार्यक्रम

अंतरराष्ट्रीय महिला दिवस - 2023
प्रधान कार्यालय में आयोजित रंगोली प्रतियोगिता